रख पत रखा पत

(लघु उपन्यास)



शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

ब्रजभूषण

रख पत रखा पत

परिवार-नियोजन पर आधारित तथा शिक्षा-मंत्रालय भारत
सरकार द्वारा पुरस्कृत लघु उपन्यास

ब्रजभूषण

समाज शिक्षा प्रकाशन

मूल्य : पैंतालीस रुपये (Rs. 45.00)

संस्करण : 2010 © प्रकाशक
ISBN : 978-93-80717-02-9
RAKH PAT RAKHA PAT (Novel)
by Braj Bhushan

समाज शिक्षा प्रकाशन

मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

1

नारायण सारे गाँव में नारायण भैया के नाम से मशहूर है। छोटे-बड़े सभी उसे प्यार करते हैं। वह भी सभी के दुःख-सुख में भाग-दौड़ करता रहता है। शहर से पढ़-लिख कर अब गाँव में ही आ बसा है। माता-पिता का देहान्त हो गया तो खेती-बाड़ी का सारा काम खुद सँभाल लिया। गाँव वाले पहले तो हैरान हुए कि शहर का पढ़ा-लिखा छोकरा गाँव में कैसे टिकेगा, लेकिन जब नारायण ने शहरी चोला उतारकर धोती-कुरता पहना और खेतों में उतर गया तो दो दिन बाद ही गाँव वालों की हैरानी दूर हो गई। गाँव के सयाने लोगों ने मिलकर तय किया कि गाँव में बने नये स्कूल में नारायण को ही अध्यापक का काम सौंपा जाये। इस तरह नारायण भैया अब अपनी खेती भी सँभालते हैं और बच्चों को भी पढ़ाते हैं।

छोटा-सा स्कूल है। दिन में पढ़ाने के बाद शाम को नारायण चौपाल में गाँव के दूसरे बच्चों को लेकर बैठता है और उन्हें तरह-तरह की कहानियाँ सुनाता है। बच्चे घर

जाकर माँ और बाबा को नारायण भैया से सुनी कहानियाँ सुनाने लगे तो उन्हें भी चाव लगा। अब तो हर शाम को चौपाल में खूब भीड़ होने लगी। छोटे-बड़े, बूढ़े-जवान, यहाँ तक कि औरतें भी, सभी अपना काम निपटाकर कहानियाँ सुनने आने लगे।

आज नारायण बहुत ही दुःखी और उदास है। दिन ढले उसे पता चला कि गोपी तांगेवाला कर्ज़ और गरीबी से तंग आकर अपनी बीवी और छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर गाँव से कहीं चला गया है तो उसका मन बड़ा भारी हो गया। वह सोचने लगा कि गोपी के छोटे-छोटे बच्चों का अब क्या होगा? जब वह गोपी की घरवाली को दिलासा और तसल्ली देकर वापिस लौट रहा था तो रास्ते में उसे लखन मिल गया। वह नशे में लड़खड़ा रहा था। उसे ऐसी हालत में देखकर नारायण ने कहा–"अरे लखन, तुम भी इस बीमारी के शिकार हो?"

जात का हरिजन मगर दिल का नेक लखन शर्म से पानी-पानी हो गया। वह नारायण भैया की इज़्ज़त करता है। इसलिए सिमटकर बोला–"नहीं भैया, नहीं। मैं पीता नहीं। बस आज ही ज़रा-सी पी है। मेरे पास भला पीने-पिलाने के लिए पैसा कहाँ?"

नारायण ने डाँटा–"तो आज क्या ज़रूरत आ पड़ी थी पीने की? क्या किसी हकीम ने कहा था?"

लखन की आँखें छलछला आईं। रोते-रोते उसने बताया–"क्या करूँ भैया, दुखी और परेशान हो गया हूँ। बापू तो मर गए मेरे सिर पर कर्ज़ छोड़कर। कर्ज़ चुकाते-चुकाते मैं तो भरी जवानी में ही बूढ़ा होने लगा हूँ। मरता क्या न करता, सोचा थोड़ी-सी घूँट गले से नीचे उतरेगी तो कर्ज़ की बात बिसर जाएगी और कर्ज़ के मर्ज़ से छुटकारा मिलेगा।"

लखन के दुःख से दुखी होकर नारायण ने उसे समझाया–"ना रे लखन, ना। दुःख से इससे कहाँ छुटकारा मिलता है रे बावले! मुँह में लगने के बाद यह तो और ज़्यादा जकड़-पकड़ कर दुखी कर देती है। हिम्मत से काम ले, ये अँधियारे हमेशा रहने वाले नहीं हैं। बुरे दिन कटकर अच्छे दिन भी आयेंगे। मगर अच्छे दिनों को देखने के लिए अच्छे बने रहना और अच्छाई की तरफ बढ़ते रहना भी ज़रूरी है।"

नारायण की अच्छी लगने वाली बात सुनकर लखन ने अपने आँसू पोंछे, और कानों को हाथ लगाकर बोला–"भैया, अब खाई सो खाई, आगे राम-दुआई। फिर ऐसी गलती नहीं होगी।"

नारायण ने मुस्कराकर कहा–"चलो अच्छा है। सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो भूला नहीं कहाता। और हाँ, आज शाम को चौपाल में ज़रूर आना।"

लखन हैरानी से उसका मुँह ताकने लगा और

बोला–"चौपाल में मुझे कौन घुसने देगा, भैया! ना–ना, मुझे वहाँ मत बुलाओ।"

नारायण ने पास आकर उसके कँधे पर हाथ रखा और प्यार से बोला–"सचमुच बड़ा बावला है भाई तू। वे दिन अब लद गए जब छोटे-बड़े, अमीर–गरीब और छूत-अछूत का भेद किया जाता था। अब तो नया सूरज उदय हो रहा है इस धरती पर। इस नई रोशनी में सब एक-से दिखाई देंगे। समझा!"

दबी-दबी ज़बान से लखन ने कहा–"अच्छा भैया, आपका कहा कैसे टालूँ! आ तो जाऊँगा, मगर कुछ ऊँचा–नीचा हुआ तो आपको ही सँभालना पड़ेगा।"

नारायण ने प्यार से डाँटा–"जाता है या नहीं! और सुन, नहा-धोकर आना।"

नारायण आगे बढ़ गया। लखन भी अपने झोंपड़े की तरफ चला गया।

अँधेरा घिरने लगा तो नारायण कुछ बच्चों के साथ चौपाल में पहुँचा। उसने देखा कि लखन एक पेड़ के नीचे दुबका बैठा है। उसने लखन को बुलाया और अगली पंक्ति में बैठाया। झिझकते और सकुचाते हुए लखन वहाँ बैठ गया। लखन को वहाँ बैठा देखकर पहले तो बच्चे कुछ चकराए, लेकिन चुप रहे क्योंकि नारायण भैया ने उसे वहाँ बैठाया

था। धीरे-धीरे बच्चों का जमघट जुड़ने लगा। नारायण गोबर और मिट्टी से बने ऊँचे चबूतरे पर जा बैठा। सभी बच्चे सामने बैठ गये। सब शान्त हो गए तो उसने बच्चों से पूछा–"अच्छा बताओ तो, हमारा देश कब आज़ाद हुआ था?" कुछ बच्चों ने हाथ उठाए, मगर ज़्यादा बच्चे चुपचाप और गुमसुम हो रहे। नारायण ने हाथ उठाए हुए एक बच्चे से पूछा–"गोपाल तुम बताओ?"

गोपाल खड़ा होकर बोला–"पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस के दिन हमारा देश भारत आज़ाद हुआ था।"

"शाबाश, देखो, सब बच्चों, याद रखा इस बात को कि पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस के दिन हमारा देश भारत आज़ाद हुआ था। अच्छा, अब यह बताओ कि हमारे देश के सबसे पहले प्रधानमंत्री कौन थे?"

इस बार सभी बच्चों ने हाथ उठा दिए। नारायण ने एक बच्चे से पूछा–"तुम बताओ मोहन!"

मोहन ने खड़े होकर कहा–"जवाहरलाल नेहरू।"

नारायण चौंककर बोला–"अरे...अरे, मोहन गलती कर गया। ऐसी गलती तो नहीं होनी चाहिए।" इस पर मोहन बोला–"ठीक ही तो बताया है मैंने। हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ही थे।"

नारायण ने दूसरे लड़के से पूछा–"क्यों मदन, मोहन का जवाब ठीक है क्या?"

मदन ने खड़े होकर कहा–"हाँ, जवाब तो ठीक है, मगर जवाब देने का तरीका ठीक नहीं है। बड़ों का और महापुरुषों का नाम इ़ज़्ज़त से लेना चाहिए। इसे कहना चाहिए कि हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री थे, श्री जवाहरलाल नेहरू या पंडित जवाहरलाल नेहरू।"

नारायण ने खुश होकर कहा–"शाबाश। समझे मोहन, बड़ों का नाम इ़ज़्ज़त और आदर से लेना चाहिए। अच्छा, अब यह बताओ कि बच्चे उन्हें प्यार से क्या कहते थे? तुम बताओ हीरा!"

हीरा नाम के बच्चे ने खड़े होकर कहा–"चाचा नेहरू।"

"हाँ, चाचा नेहरू। ये सभी बच्चों के चाचा थे। वे बच्चों को बहुत प्यार करते थे। मगर एक और भी महापुरुष थे जो चाचा नेहरू से बड़े थे और बच्चों को बहुत प्यार करते थे। कौन बताएगा उनका नाम?" सब बच्चों ने देखा कि इस बार लखन ने भी हाथ खड़ा कर दिया है, तो वे हँसने लगे। नारायण ने उससे पूछा–"अच्छा, लखन, तुम बताओ!"

लखन ने खड़े होकर कहा–"महात्मा गाँधी।"

मुस्कराकर नारायण ने कहा–"अरे वाह लखन, वाह! कमाल कर दिया तुमने। मगर तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

लखन ने खड़े-खड़े सकुचाते हुए बताया–"भैया, आपके स्कूल में रोज़ झाड़ू लगाता हूँ। वहाँ महात्मा गाँधी की तस्वीर

टँगी है। एक दिन कल्लू से पूछा तो उसने बताया था कि यह तस्वीर महात्मा गाँधी की है।"

नारायण ने उसे बैठाते हुए कहा–"बहुत अच्छा! महापुरुषों का नाम और काम जानने से मन में अच्छी बातें आती हैं और आदमी अच्छी बातें और काम करने के लिए तैयार होता है। अब यह कौन बताएगा कि महात्मा गाँधी को प्यार से क्या कहा जाता था?"

सभी बच्चे एक साथ बोल पड़े–"बापू!"

इस बार तो नारायण बहुत ही खुश हो गया। वह बोला–"भई वाह! तुम्हें मालूम है, बापू को राष्ट्रपिता कहा जाता है! देश की बुराइयों को दूर करने और देश को आगे लाने में बापू का बहुत बड़ा हाथ है। यूँ तो उन्होंने बहुत बड़े-बड़े काम किए हैं, लेकिन हरिजनों की हालत सुधारकर उन्हें आगे लाने का काम, उन्होंने सबसे बड़ा काम समझकर किया।"

धीरे-धीरे बड़े-बूढ़े भी यहाँ आकर बच्चों के पीछे बैठने लगे। कुछ औरतें भी आ गई थीं। एक औरत ने लखन को वहाँ बैठा देखा तो पास वाली के कान में फुसफुसाने लगी। धीरे-धीरे लखन के वहाँ बैठने की बात सभी को मालूम हो गई। पीछे बैठे लोग मुँह उठा-उठाकर उसे देखने लगे। नारायण ने भी यह सब देखा तो उन्हें टोकते हुए कहा–"क्या देख रहे हो? चिड़ियाघर का कोई जानवर नहीं है। लखन है लखन!"

वहाँ बैठा छोगालाल बोल पड़ा–"पर नारायण भैया, तुम्हें मालूम है कि लखन हरिजन है। क्या छूत-अछूत का कोई विचार नहीं रहा?" छोगालाल के साथ ही दो-तीन बड़े-बूढ़ों ने भी एतराज़ उठाया। इस पर नारायण ने शान्ति से कहा–"आप लोग कौन-से ज़माने की बातें कर रहे हैं। वक्त बदल रहा है। वक्त के साथ-साथ अगर आप लोग नहीं बदलेंगे तो जीना मुश्किल हो जाएगा। छूत और अछूत होता ही क्या है? जो हवा लखन को छू रही है, वही हवा आप सबको भी छू रही है। क्या हवा को अछूत समझकर आप लोगों ने साँस लेना बन्द कर दिया? जिस ज़मीन पर लखन चलता है उसी ज़मीन पर आप सब भी चलते हैं। क्या आप सबने ज़मीन छोड़ दी है? जो धूप, चाँदनी और बरसात आपके शरीर और घरों पर पड़ती है, वही इसके शरीर पर भी पड़ती है। क्या आप लोगों ने इन सभी को अछूत समझकर इनका त्याग किया है? नहीं किया। क्यों नहीं किया? क्योंकि इन सभी चीज़ों से आपके काम पूरे होते हैं, आपके स्वार्थ साधे जाते हैं। यह हरिजन भी तो आपके स्वार्थों को साधता है।"

सामने बैठे सभी लोग नारायण की बात गौर से सुन रहे थे। कुछ युवकों ने उसकी बात से खुश होकर तालियाँ बजाईं। उन्हें देखकर बच्चों ने भी तालियाँ बजाईं। नारायण ने सभी को शान्त किया, मगर छोगालाल खड़ा होकर कहने

लगा–"सब बातें ठीक हैं, मगर बाप-दादाओं के ज़माने से चली आई रीत और रस्म को क्या बातों की हवा से उड़ा दें?"

नारायण ने उसे बैठ जाने के लिए कहा और मीठे ढंग से बोला–"नहीं, बातों से नहीं, समझ, सच्चाई और समय



की आवाज़ की हवा से उन बुरे रीति-रिवाज़ों को मिटाना ही होगा जो आदमी को आदमी से नफरत करना सिखाते हैं। बहुत-सी पुरानी रस्में आज सही नहीं हैं। और बहुत-सी ऐसी भी बातें हैं जो वक्त के साथ सही हैं, लेकिन पुरानी रस्मों पर चलने वाले लोग उन्हें मानते नहीं। जैसे आप हरिजन से नफरत करते हैं। लेकिन आज ऐसे भी लोग हैं जो ज़्यादा बच्चों के बाप को हरिजन से भी ज़्यादा बुरा समझते हैं। यानी कि वे हरिजन से नफरत नहीं करते, मगर ज़्यादा बच्चों के बाप से नफरत करते हैं। नफरत करने की रस्म भी बदलती जा रही है। आप किसी कारण से जब दूसरों से नफरत करते हैं तो दूसरे भी तो आपसे किसी कारण को लेकर नफरत कर सकते हैं। कारण होते हुए भी यहाँ आप से नफरत कोई नहीं कर रहा है।''

छोगालाल गुस्से से उठ खड़ा हुआ और अपने बच्चों को भी खड़ा कर लिया। फिर ज़ोर से बोला–''मेरी पत उतारना चाहते हो?''

नारायण ने कहा–''नहीं, बिल्कुल नहीं। मैं तो सिर्फ इतना कह रहा हूँ कि अगर आपको अपनी इ़ज़्ज़त से प्यार है तो दूसरों की इ़ज़्ज़त करना सीखो। बुज़ुर्ग कह गए हैं–रख पत रखा पत। लखन हरिजन है इसलिए आप उससे नफरत करेंगे तो कल को वह भी आपसे नफरत करेगा, क्योंकि आपके सात बच्चे हैं।''

छोगालाल झुँझला उठा और बोला–"होश की बात करो। बच्चे भगवान की देन होते हैं।"

नारायण ने उसकी बात काट दी–"यह लखन भी तो बच्चा बनकर और भगवान की देन बनकर इस धरती पर आया है। फिर भगवान की सारी देन आपको बटोर लेने का हक कैसे हासिल हो गया? इसको भी छोड़िए। बच्चा पैदा होने के साल-दो साल तक गंद उठाने और सफाई करने का जो काम माँ करती है वही काम तीसरे साल से लेकर सारी ज़िन्दगी भर हरिजन करते हैं। माँ तो सभी को जी-जान से प्यारी हो जाती हैं, सिर्फ दो साल गंद उठाकर। उसके लिए तो हम अपनी खाल के जूते भी बनाने को तैयार रहते हैं और यह हरिजन जो माँ की ज़िम्मेदारी सारी ज़िन्दगी निभाता है उसकी खाल उतारने के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसा क्यों?"

इस बार तो छोकरों के साथ-साथ बड़े-बूढ़ों ने भी ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाईं। एक युवक खड़ा होकर बोल पड़ा–"बस भैया बस! बहुत हुआ। आप ठीक कहते हैं। रख पत रखा पत। लखन बैठा रहे, हमें कोई अड़चन नहीं। अब तो आप कोई मज़ेदार कहानी सुनाइए।"

छोगालाल अपने बच्चों को लेकर बड़बड़ाता हुआ वहाँ से चला गया। नारायण अब कहानी सुनाएगा, यह जानकर सभी आगे बढ़े और सिमट-सिमट कर बैठ गए। एक छोकरे

ने उतावले होकर कहा–"हाँ भैया, कौन-सी कहानी सुनाओगे आज?" नारायण ने मुस्कराकर कहा–"सुनाता हूँ, भाई, सुनाता हूँ। सुनो, एक बार यमराज ने अपने दूतों से कहा कि धरती पर जाकर कुछ लोगों को मार डालना है, मगर ऐसी मौत मारना है कि मरने के पहले वह अपना तन-मन-धन, चरित्र, सुख, परिवार, मान-सम्मान सब कुछ खो बैठे। लोग उससे नफरत करने लगें। उसके परिवार वाले उस पर थूकें। उसके मित्र और रिश्तेदार उसकी शक्ल भी देखना पसंद न करें। ऐसी हालत पैदा करके फिर उसके प्राण छीन लेने हैं। यह सुनकर सब यमदूत एक दूसरे का मुँह देखने लगे, क्योंकि ऐसी मौत मार सकना तो किसी के वश की बात नहीं थी। सब चुप रह तो तपेदिक की बीमारी बोल उठी कि यमराज मैं जाती हूँ धरती पर और ऐसी मौत मारूँगी कि बिस्तर में लगकर फिर आदमी उठ ही नहीं सकेगा। पर यमराज को बात जँची नहीं। इससे तो आदमी सिर्फ मर सकेगा। बरबाद कैसे हो सकता है? हैज़ा आगे आया और बोला कि मैं एकदम जाऊँगा और देखते ही देखते लाखों लाशों के ढेर लगा दूँगा। यमराज को उसकी बात भी नहीं जँची। प्लेग, दमा, कैंसर, निमोनिया सभी ने जाने के लिए कहा, मगर यमराज ने सभी को फटकार दिया और कहा कि सिर्फ प्राण नहीं लेने हैं, सुख, शान्ति, धन, परिवार, सभी कुछ मटियामेट करना है। अन्त में मदिरा पिशाचिनी

आगे आई और बोली कि मैं जाती हूँ पृथ्वी पर। सबसे पहले मैं आदमी की मति मार दूँगी, फिर उसको कर्ज़ और मर्ज़ में डुबो दूँगी। इस तरह उसकी सुख-शान्ति नष्ट हो जाएगी। उसका शरीर खोखला हो जाएगा। उसका मन पापी हो जाएगा। वह जीता हुआ भी मरे से बुरा होगा। मदिरा पिशाचिनी की बात सुनकर यमराज खुश हुए।''

कहानी का मज़ा लेते हुए सभी लोग हँसने लगे। आगे बैठा लखन सकपका गया। उसे कुछ बेचैनी होने लगी। नारायण ने लखन की तरफ देखा और आगे कहने लगा–''हाँ, तो यमराज को खुश देखकर संतति देवी भी बोल पड़ी कि, यमराज, मैं जब तक तीन बच्चे देती हूँ तो देवी बनी रहती हूँ और वरदान समझकर देती हूँ, लेकिन आदमी को तीन बच्चों का वरदान देने के बाद मेरा रूप देवी का नहीं पिशाचिनी का हो जाता है, इसलिए मदिरा के साथ मैं भी धरती पर जाती हूँ। हम दोनों मिलकर लोगों को ऐसी मौत मारेंगे कि वे अपनी सुख, शान्ति, मान-मर्यादा खो बैठेंगे।...''

कुछ छोकरे छोगालाल को ज़बरदस्ती पकड़कर वहाँ ले आए और पीछे मंगतराम के पास बैठा दिया। मंगतराम और छोगालाल ने कहानी सुनी तो इधर-उधर देखने लगे। क्योंकि दोनों के ही ढेर-सारे बच्चे थे।

नारायण ने आगे कहा–''यमराज संतति की बात से बहुत खुश हुए और कहा कि यह ठीक है। तुम लोगों की

मति भ्रष्ट करके उनके घर में बच्चों के ढेर लगा देना। बस बरबादी का रास्ता खुल जाएगा और आदमी बेमौत मरने लगेगा। जाओ धरती पर! ...तो भाइयो, उस दिन से धरती पर मदिरा और संतति अपने अलग-अलग रूपों में काम कर रही हैं।''

कहानी सुनकर बड़े-बूढ़े यहाँ तक कि औरतों ने भी खूब ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाईं। लखन खड़ा होकर दोनों कानों को पकड़कर बोला—''मैं सौगन्ध लेता हूँ कि कभी मदिरा नहीं पिऊँगा।''

लखन के बाद कई लोगों ने खड़े होकर सौगन्ध खाई और मदिरा को छोड़ने का संकल्प किया। पीछे बैठे मंगतराम और छोगालाल बड़े बेचैन और परेशान नज़र आ रहे थे। नारायण बोल पड़ा—''आज तो बहुत ही खुशी का दिन है। लखन ने यहाँ आकर कई लोगों का भला कर डाला।''

एक युवक खड़ा होकर बोला—''तो भैया, इस खुशी के मौके पर एक कहानी और हो जाये!''

सभी एक साथ बोले—''हाँ-हाँ, हो जाये!''

नारायण ने कहा—भाई, मेरा काम ही कहानी सुनाना है। आप लोगों को सुनने का शौक है तो ज़रूर सुनाऊँगा। सुनो—एक बार एक राजा ने दूसरे राजा के राज्य पर हमला कर दिया। रात का वक्त था। हमला करने वाले राजा की फौज़ रास्ते में आने वाले गाँव को लूटती-खसोटती आग लगाती

आगे बढ़ रही थी। जब यह फौज़ नदी के किनारे पर बसे एक गाँव में पहुँची तो रात गहरी हो चुकी थी। फिर भी हो-हल्ला सुनकर गाँववाले जाग पड़े। उन्हें पता लग गया कि दुश्मन राजा का हमला हुआ है। सभी अपनी जान बचाकर भागे। उस गाँव के एक घर में तीन भाई भी रहते थे। कनकराम, खूबचन्द और ठाकुरदास। इन तीनों भाइयों ने जब शोर सुना और आग लगी देखी तो ये भी भागने की तैयारियाँ करने लगे। ठाकुरदास ने अपनी घरवाली का हाथ पकड़ा और अपने एक बच्चे को गोद में उठाया और भाग निकला, नदी की तरफ नाव पकड़ने के लिए। सबसे बड़े भाई कनकराम के दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की। लड़की को घरवाली ने गोद में उठाया और लड़के को कनकराम ने कँधे पर बैठाया और इस तरह ये दोनों भी नाव पकड़ने के लिए नदी की तरफ भाग लिए। अब रह गया खूबचन्द। उसके तीन बच्चे थे। एक बच्चा तो घरवाली ने गोद में उठा लिया, दूसरे को उसने सँभाला, मगर तीसरी और बड़ी लड़की नींद में थी, इसलिए चलने को तैयार ही नहीं हो रही थी। खूबचन्द ने उसे घसीटना शुरू किया, लेकिन इतने पर भी ये लोग नदी की तरफ जल्दी से बढ़ नहीं सके। और फिर देखा कि दुश्मन के सिपाही इनकी छाती पर चढ़े आ रहे हैं। सिपाहियों ने तीनों बच्चों और घरवाली को मार डाला। खूबचन्द अँधेरे में एक गड्ढे में जा गिरा, इसलिए बच गया। वह रात-भर उसी गड्ढे में पड़ा रहा।

जब सुबह हुई तो गाँव उजड़ चुका था। एक फकीर उधर गया, उसने घायल खूबचन्द को गड्ढे से निकाला। पूरा किस्सा सुनकर फकीर ने कहा कि उसका नसीब ही खराब है। इस पर खूबचन्द बिगड़ गया और फकीर से पूछने लगा कि क्या उसके छोटे और बड़े भाई का नसीब खराब नहीं था, सिर्फ उसी का नसीब खराब है? असल बात तो यह है कि मेरे छोटे भाई के एक बच्चा था, वह आराम से भाग सका। मेरे बड़े भाई के दो बच्चे थे, वे लोग भी भागने में सफल हो गए, लेकिन मैं तीन बच्चों के कारण मारा गया। मेरे भी एक या दो बच्चे होते तो मैं भी अपने परिवार के साथ आराम से भागकर निकल सकता था। मेरा नसीब नहीं मेरी अक्ल खराब थी। न तीन बच्चे होते न मैं बरबाद होता। मेरी बरबादी भाग न सकने के कारण हुई है। भाग न सकने में कारण थे मेरे तीन बच्चे...इसलिए भाइयो, एक या दो बच्चे का पिता बनने में तो आज़ादी है–ठाकुरदास और कनकराम की तरह, मगर दो से ज़्यादा बच्चों का बाप बनने में बरबादी ही बरबादी है, जैसे कि खूबचन्द बरबाद हो गया।''

हँसी और तालियों से एक बार तो सारी चौपाल हिल गई। रात ज़्यादा होने से नारायण ने सभी को अपने-अपने घर जाने के लिए कहा। लखन हाथ जोड़ता, बार-बार नारायण का धन्यवाद करता हुआ अपने झोंपड़े की तरफ चल दिया। मंगतराम और छोगालाल अपने बच्चों को साथ लेकर चले तो सभी बार-बार

उनकी तरफ देखने लगे। दोनों लोगों की नज़र बचाकर जल्दी-जल्दी अपने-अपने घर की तरफ निकल गए।

2

गाँव के बस-स्टैण्ड पर छोगालाल की एक छोटी-सी दुकान है—पान-बीड़ी की। दिन-भर कोई-न-कोई बस आती-जाती रहती है। मुसाफिर बस-स्टैण्ड पर उतरकर नाश्ता और नशा-पानी करते हैं। पानी-बीड़ी की उस छोटी-सी दुकान से छोगालाल को इतनी आमदनी हो जाती है कि वह रोते-झींकते अपने सात बच्चों के परिवार के पेट को रोटी दे सके। छोगालाल का सबसे बड़ा लड़का छगन अब दुकान पर नहीं बैठता। वैसे तो बाप ने पास के गाँव में छठी कक्षा तक उसे पढ़ाया था, मगर जल्दी ही दुकान पर बैठा लिया। पर वह गल्ले पर हाथ साफ करने लगा। वह ज़्यादा ही हाथ साफ करने लगा तो छोगालाल ने उसे हटाकर छोटे लड़के छज्जू को बैठा दिया। पर जब छोगालाल दुकान पर न होता तो छगन वहाँ आता और छज्जू को डरा-धमका कर पैसे ऐंठ लेता। छगन अब आवारा हो गया है। वह पास के शहर में सिनेमा देखने जाने लगा है। उसे जुआ खेलने की आदत भी पड़ गई है।

छोगालाल का तीसरा बेटा छदामी सारे गाँववालों के लिए सिरदर्द बन गया है। कभी किसी बच्चे को पत्थर मारकर उसका सिर फोड़ देता है, कभी किसी को धक्का देकर भाग जाता है तो कभी रेत की मुट्ठी किसी की आँखों में फेंककर घर में घुस जाता है। उसकी शैतानियों में अब उसका छोटा भाई नटवर भी साथ देने लगा है। आज सुबह-सुबह दोनों कुएँ पर जा पहुँचे और डोल से पानी खींचकर एक-दूसरे पर उछालने लगे। नटवर ज़रा झुककर कुएँ में बैठे कबूतर को देखने लगा तो छदामी ने उसे धक्का देते हुए कहा–"जा पकड़ ला अन्दर से कबूतर!"

छदामी ने शरारत में धक्का तो दे दिया, मगर उसे यह नहीं मालूम था कि अंजाम भयंकर हो जाएगा। नटवर के पाँव लड़खड़ाए और वह चीखता हुआ कुएँ में जा गिरा। छदामी भी घबराकर चीख मारता और शोर मचाता हुआ वहाँ से भागा। दोनों की चीखें सुनकर आस-पास के घरों से औरतें दौड़ी आईं। आदमी तो अपने-अपने काम-धँधों पर थे। कुछ ही दूर पर स्कूल था, जहाँ नारायण बच्चों को पढ़ा रहा था। चीखें उसने भी सुनीं। नटवर कुएँ में हाथ-पाँव मारता शोर मचाने लगा तो उसे इस हालत में देखकर औरतें भी शोर मचाने लगीं। आस-पास कोई आदमी दिखाई नहीं दिया। लेकिन तभी लखन उधर आ निकला। औरतों ने उसी से कुछ करने के लिए कहा। लखन पहले तो झिझका,

लेकिन कुएँ में झाँककर जब नटवर को तड़पते देखा तो उससे नहीं रहा गया। उसने डोल की रस्सी के छोर को घिर्री के डण्डे से अटकाया और रस्सी के सहारे कुएँ में उतरने लगा। तब तक चीख-पुकार सुनकर कुछ आदमी भी वहाँ आ पहुँचे। नारायण भी दौड़ा-दौड़ा आया। इस हो-हल्ले के बीच छोगालाल की घरवाली गोमती को पता चला तो वह छाती पीटती शोर मचाती वहाँ आ पहुँची। नटवर को धीरे-धीरे अपनी कमर से लपेटकर लखन ने कुएँ से बाहर निकाला। नटवर कुछ अचेत हो गया था। गोमती को पता चला कि छदामी की करतूत है तो वह रोते-रोते उसे कोसने लगी। बेचारा लखन चुपचाप और डरा-डरा-सा एक तरफ खड़ा था। छोगालाल को खबर लगी तो वह भी भागता-हाँफता वहाँ आ पहुँचा। उसकी हालत भी रोने जैसी हो गई।

नारायण नटवर को उल्टा लेटाकर धीरे-धीरे उसके पेट में भरे पानी को निकालने लगा। छोगालाल भी पास बैठकर उसके हाथ-पाँव सहलाने लगा। धीरे-धीरे नटवर को होश आने लगा। छोगालाल ने नटवर को गोद में लेना चाहा तो नारायण ने कहा–''छोगालाल जी, अब नटवर आपके काम का नहीं रहा। इसे लखन ने कुएँ से निकाला है। आप तो छूत-अछूत को मानते हैं। अब तो नटवर को भी छूत लग गई है, फिर आप इसे घर में कैसे रख सकेंगे?''

यह बात गोमती को बुरी लग गई। हाथ नचाकर उसने

नटवर को गोद में लेते हुए कहा–"अरे तुम्हारी मति मारी गई है क्या? लखन ने इसे निकाला तो क्या हम अछूत समझकर इसे घर से धक्का दे देंगे? ऐसा भी कहीं होता है?"

नारायण ने कहा–"मैं तो नहीं कहता कि ऐसा होता है, पर छोगालाल जी ऐसा ही मानते हैं।"

छोगालाल तो शर्म से ज़मीन में ही गड़ा जा रहा था। उसने लखन का हाथ पकड़ा और उसे गले से लगाते हुए



बोला–"अब और जूते ना मारो भैया। लखन तो भाई है हमारा। मति तो हमारी मारी गई थी जो छूत-अछूत की बातों में ज़िन्दगी गवाँ बैठे।" फिर वह लखन से बोला–"लखन भैया, आज तो तुम्हें मेरे साथ घर चलना होगा और मेरे साथ बैठकर भोजन करना होगा।"

यह सुनकर लखन घबरा गया। हाथ छुड़ाकर वह बोला–"नहीं-नहीं, ऐसा कैसे होगा? ऐसा नहीं हो सकता।" और वह वहाँ से भाग लिया। सब देखते ही रह गये। छोगालाल ने नटवर को गोद में उठाया और घर की तरफ चल दिया। छदामी को कोसती गोमती भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। नारायण स्कूल की तरफ लौट गया। दूसरे लोग भी बातें करते हुए अपने-अपने काम-धँधों पर लग गए।

छोगालाल और गोमती नटवर को लेकर घर पहुँचे ही थे कि मंगतराम भागा-भागा आ पहुँचा। इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने कहा–"अब छदामी को मारना-पीटना मत। पता नहीं बेचारा डर का मारा कहाँ दुबका पड़ा होगा।"

छोगालाल को अब तक गुस्सा था। उसने कहा–"क्या बताऊँ मंगतराम, मैं तो तंग आ गया हूँ इस औलाद से। ये बेचारी दो लड़कियाँ कुछ नहीं कहती-सुनतीं, बाकी तो पाँचों के पाँचों कपूत हैं। ऐसी कपूत औलाद से तो आदमी निपूता भला। तुम्हारे भी तो हैं। तीनों बच्चे कितने सयाने और समझदार हैं।"

मंगतराम ने असली बात बताते हुए कहा–"मुझे पता है जितने सयाने हैं ये। लड़के तो फिर भी घर के बाहर जाकर धमा-चौकड़ी कर आते हैं, मगर लड़कियाँ तो सारे घर को सिर पर उठाए रखती हैं। बड़ी वाली सोना सयानी और ब्याह लायक हो गई है। वह बेचारी सारा घर सँभालती है।"

छोगालाल ने कहा–"भाग्यशाली हो भैया, तुम्हारे घर में कोई बच्चा सयाना तो है। मेरे यहाँ तो सब खोटे सिक्के हैं। छगन के बारे में तो तुम्हें सब कुछ पता ही है। आज छदामी की हरकत भी देख ली।"

गोमती ने जल्दी-जल्दी दूध गर्म किया और नटवर को पिलाने लगी। छोगालाल ने दालान में खाट डाल दी। दोनों वहाँ बैठकर बतियाने लगे। बात चल पड़ी छगन की। मंगतराम ने सलाह दी–"छगन भी तो सयाना हो गया है। नकेल क्यों नहीं डाल देते? ब्याह कर दो, अपने-आप रास्ते पर आ जाएगा।"

छोगालाल ने चौंककर कहा–"कौन देगा ऐसे लुच्चे को अपनी बेटी? जो आएगी वो रोएगी अपने जनम-करम को।"

मंगतराम ने एतराज़ किया–"नहीं भाई, ऐसी बात नहीं। चढ़ती उम्र में छोकरे धमा-चौकड़ी करते ही हैं। नकेल पड़ते ही सीधे भी हो जाते हैं। ब्याह हो गया और सिर पर ज़िम्मेदारी आ पड़ी तो सभी रास्ते पर आ जाते हैं।"

मंगतराम की बात कुछ ठीक लगी तो छोगालाल ने कहा–"पर कोई लड़की भी तो हो!" -

मौका देखकर मंगतराम ने कहा–"हमारी दोस्ती रिश्ते में बदल जाए तो हर्ज़ है कुछ? मेरी सोना क्या तुम्हारे घर के लायक नहीं?"

छोगालाल ने हैरानी से उसके मुँह की तरफ देखा और कहा–"देखती आँखों मक्खी निगलना चाहते हो? कुएँ में धकेलना चाहते हो अपनी बेटी को? जानते-बूझते उस लफंगे छगन के पल्ले क्यों बाँधना चाहते हो? ना भाई ना, तुम्हारी लड़की नाम से ही नहीं गुन से भी सोना है। उस बेचारी को छगन के पल्ले बाँधकर मैं पाप का भागी बनना नहीं चाहता।"

मंगतराम ने जवाब दिया–"भाई, छोगालाल, मैं सोना का बाप हूँ, उसका दुश्मन नहीं। ब्याह होते ही छोकरे घर के हो रहते हैं। मुझे पता है, छगन ऐसा गया-गुज़रा नहीं। पर तुम अपने मन की बात तो कहो!"

छोगालाल विचार में पड़ गया। नटवर दूध पीकर और कपड़े बदलकर बाहर चबूतरे पर आ बैठा था। उसे पुचकारते और दुलारते हुए गोमती भी वहाँ आ गई और बोली–"चल रे नटवर, थोड़ा सो ले। यहाँ कहाँ आ बैठा?"

छोगालाल ने उसे टोका–"रहने दे। ज़बरदस्ती बिस्तर पर क्यों धकेल रही है? बाहर खुले में बैठेगा तो अच्छा लगेगा।

ज़रा इधर भी सुन, मंगत जी क्या कह रहे हैं! छगन के लिए सोना की बात पक्की करने को कहते हैं। तेरा क्या ख्याल है?''

इसी गाँव की होने के कारण गोमती बहुत कम लोगों से परदा करती है। नटवर के पास बैठती हुई बोली–''अरे सोना तो साकछात लछमी है, लछमी। जिस घर में जाएगी वह घर तो जगमग हो जाएगा। पर यह बात है, मंगल जी, मेरे एक दूर के भाई जो शहर में रहते हैं उन्होंने एक जगह बात पक्की कर रखी है। लड़की वाले गहने-गाँठे, कपड़े-लत्ते के अलावा पाँच हज़ार नकद भी देने को तैयार हैं।''

छोगालाल बीच में बोल पड़ा–''यानी कि पन्द्रह-बीस हज़ार का खर्चा करने को तैयार हैं वे लोग। मैं ही टालता रहा। सोचा, छगन के ढंग-ढोरे ठीक हो जाएँ तभी बात आगे बढ़ाऊँ।''

दोनों की बातें सुनकर मंगतराम का मुँह लटक गया। गहरी-सी सांस खींचकर वह बोला–''पन्द्रह-बीस तो क्या, मुझसे तो पाँच का जुगाड़ भी नहीं होगा। बाप हूँ, सो अपनी बेटी को रूखी-सूखी तो भेजूँगा नहीं, जो बनेगा दूँगा, मगर हज़ारों वाली बात मेरे वश की नहीं है।''

''हम पन्द्रह-बीस हज़ार की बात नहीं कर रहे, मगर पाँच दस खर्च किए बिना तो शोभा भी नहीं होगी। सोच लो!''

गोमती की बात सुनकर मंगतराम बोला–"शोभा तो लड़की के लच्छनों से होती है। मेरे पास हज़ारों होते तो क्या सोना जैसी बेटी अब तक बिन ब्याहे रह जाती! दहेज के नाम पर मैं तो कुछ भी नहीं दे सकूँगा।"

गोमती ने उसकी बात काटते हुए कहा–"मंगत जी, बिना दहेज के भला कहीं शादियाँ होती हैं! लोग क्या कहेंगे?"

भारी मन से मंगतराम ने कहा–"मैं लोगों की कही बात सुनूँ या अपना घर देखूँ? एक होती तो कर्ज भी ले लेता। चार-चार बैठी हैं मेरी छाती पर। मैं तो पहले से ही कर्ज़ में दबा पड़ा हूँ।"

मंगतराम अपनी बात पूरी कर पाया तभी नारायण आ पहुँचा और पूछा–"कैसा है अब नटवर?"

फिर सामने उसे बैठा देखकर बोला–"अरे वाह, हिम्मत वाला लड़का है! शाबाश।"

छोगालाल की तरफ मुड़कर उसने पूछा–"छदामी का पता चला कुछ?"

छोगालाल ने कहा–"शैतान के बच्चे हमें लापता कर देंगे, पर खुद तो सही पते पर पहुँचेंगे। पहुँचा होगा दुकान पर छज्जू के पास।"

गोमती ने नारायण को बैठाया और कहा–"सुन लो, खुद को कोस रहे हैं। अच्छा, नारायण भैया, एक बात

बताओ! बेटे की शादी में बेटी वालों से दहेज की बात करना बुरी बात है क्या?''

नारायण ने तुरन्त अपना फैसला सुनाया–''बिना दहेज तो शादी हो ही नहीं सकती।''

गोमती ने खुश होकर कहा–''सुन लिया मंगतराम जी! बिना दहेज शादी हो ही नहीं सकती।''

मंगतराम डूबती आवाज़ में बोला–''बड़े दुःख और अफसोस की बात है कि नारायण दहेज की पैरवी कर रहा है। शाम को चौपाल में बैठकर तो बड़ी-बड़ी ज्ञान-ध्यान की बातें लोगों को समझाता है और यहाँ आकर सारा ज्ञान पानी में डूब गया।''

नारायण ने कहा–''आपको बुरा नहीं मानना चाहिए। सच तो सच ही होता है। आज तक दुनिया में कोई शादी दहेज के बिना नहीं हुई।''

मंगतराम ने गुस्से से कहा–''शहर से पढ़-लिखकर क्या यही सीखकर आए हो कि कहो कुछ और करो कुछ और! तुम जैसे पढ़े-लिखे नौजवानों को तो दहेज के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए। मगर अफ़सोस कि यहाँ बैठकर तुम उल्टी ही बात कर रहे हो।''

नारायण भी चुप नहीं रहा और बोला–''उल्टी बात मैं नहीं आप कर रहे हैं। अब तक सारी बातें उल्टी समझीं, सारे काम उल्टे किए तो सीधी, साफ और सच बात भी

उल्टी ही समझ में आ रही है। आप ही बताइए कि आज तक किसी जाति या देश में बिना दहेज के शादी हुई है?"

"और जिस बाप के पास देने को दहेज ही न हो?" मंगतराम ने गुस्से से कहा।

नारायण ने तुरन्त जवाब दिया–"जिसके पास दहेज ही नहीं होगा वह बाप शादी ही क्यों करेगा?"

मंगतराम भड़क उठा–"मति मारी गई है तुम्हारी।"

उसे भड़कता देखकर छोगालाल और गोमती घबरा गए। गोमती ने कहा–"मंगत जी, गुस्सा ना करो। नारायण भैया ठीक ही तो कह रहे हैं। बात बनती है या नहीं, फिर देखेंगे। अभी बहस करने से क्या फायदा है!"

मंगतराम खाट से उठ खड़ा हुआ और बोला–"ये सब तो संयोग की बातें हैं। जहाँ लड़की का भाग्य होगा वहाँ जाएगी। मुझे तो नारायण की बात पर दुख हो रहा है, जो दहेज की पैरवी कर रहा है। भला एक गरीब बाप दहेज में सोना, चाँदी, कपड़े-लत्ते और नकदी कैसे दे सकता है! लाएगा कहाँ से बेचारा?"

नारायण ने मुस्कराकर कहा–"और मुझे आपकी बात पर दुख हो रहा है कि आप सोना-चाँदी और नकदी को दहेज समझते हैं। सारा झंझट तो इस गलत समझ का है, जिसने पता नहीं कब से हमारे समाज को डसा हुआ है।"

तीनों चौंक पड़े। गोमती ने हैरान होकर पूछा–"नारायण भैया, दहेज का मतलब नकदी और गहने-लत्ते ही तो होता है!"

नारायण ने बात काट दी–"नहीं-नहीं, बिल्कुल गलत। ये सब माँगनेवाला तो भिखारी होता है। शादी में इन चीज़ों के लेन-देन का भला क्या काम?"

मंगतराम, छोगालाल और गोमती तीनों हैरानी से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। फिर नारायण की तरफ ऐसे देखा जैसे किसी पागल को देखते हैं। छोगालाल ने कहा–"अभी-अभी तो दहेज की पैरवी कर रहे थे और अब दहेज लेनेवालों को गालियाँ दे रहे हो! बिन पेंदी के लौटे की तरह कभी इधर कभी उधर। आखिर तुम्हारा मतलब क्या है?"

नारायण हँसते हुए बोला–"मैं आप लोगों को बिन पेंदी का लोटा नज़र आता हूँ; लेकिन मुझे आप लोग ऐसे लोटे नज़र आते हैं जो ज़मीन की मिट्टी से चिपककर मिट्टी ही बन गए हैं। आप लोगों को दहेज का मतलब ही गलत मालूम है तो फिर दहेज की बात क्या करते हैं? दहेज शब्द ही गलत है, असली शब्द है–देहज या देह से जन्मा हुआ। नीर से जन्मा नीरज कहलाता है यानी कमल। जल से जन्मा जलज यानी वही। 'ज' का मतलब जन्मा हुआ। बेटी भी देह से जन्म लेती है, इसलिए 'देहज' कहलाती है। माँ-बाप अपनी बेटी यानी देहज को शादी में देते हैं–कन्यादान के नाम से। शुरू-शुरू में शादी में देहज को देते वक्त माँ-बाप उसके लिए कुछ गहने और अच्छे कपड़े भी देते थे। धीरे-धीरे कुछ स्वार्थी, लालची और भूखे लोग अपने बेटे की शादी

में देहज के साथ मिलनेवाले इन गहनों और कपड़ों की ज़्यादा माँग करने लगे। बेटी वाले भी बेटी के सुख का ख्याल करके देने लगे। इससे बेटे वालों का लालच और बढ़ा। उन्होंने और ज़्यादा माँगा। बल्कि अब नकदी की शक्ल में माँगा। बेचारे बेटी वाले लाचार होकर वह भी देने लगे। अब शादी में बेटी यानी देहज का मिलना तो दूसरी बात हो गई, बेटे वालों की आँख साथ में मिलने वाले गहनों, कपड़ों और नकदी पर ही टिककर रह गई। ये भूखे और लोभी लोग साथ में मिलनेवाले धन को ही असली देहज मानने लगे। अब बेटी का मिलना असली बात नहीं रह गई, बल्कि साथ में मिलने वाला धन जो देहज के कारण ही मिलता था असल बात हो गई। पता नहीं, कब से यह बुरी रीत चली आ रही है। लोभियों ने देहज के साथ मिलनेवाले इस धन का ही नाम दहेज रख दिया। वे समझने लगे कि दहेज लेना उनका हक हो गया है। अपने मतलब और लालच के लिए देहज को दहेज बनाकर इन स्वार्थी लोगों ने गरीबों की बेटियों पर बहुत जुल्म किए हैं। मगर अब वक्त करवट ले रहा है। दहेज नाम का गलत शब्द और गलत काम खत्म होगा और बेटेवालों को सिर्फ देहज मिला करेगी।''

नारायण की बात सुनकर मंगतराम की तो बाँछें ही खिल गईं, मगर छोगालाल और गोमती के चेहरे लटक गए। गोमती ने हाथ नचाकर कहा—''तुम तो गिरगिट की तरह रंग बदलने लगे भैया!''

नारायण ने सफाई दी—"बिल्कुल नहीं। मैंने कोई रंग नहीं बदला है। हाँ गलत शब्द को बदलकर ठीक ज़रूर किया है। यानी दहेज को देहज किया है। मैंने जो कहा था वही अब भी कहता हूँ कि शादी बिना देहज के हो ही नहीं सकती। आज तक किसी भी देश या जाति में बिना देहज के शादी नहीं हो सकी है। सोचो तो! बेटी नहीं होगी तो शादी कैसे होगी? क्यों, मंगतराम जी, जिस बाप के पास देने को देहज नहीं वह शादी ही क्यों और कैसे करेगा? शादी करने के लिए बेटी यानी देहज का होना बहुत ज़रूरी है। आगे आप जानो आपका काम। मैं चला।"

इतना कहकर नारायण उठ खड़ा हुआ और चल दिया। मंगतराम ने भी चलते हुए कहा—"अजीब लड़का है यह नारायण भी। कहाँ से शुरू होगा और कहाँ खत्म करेगा, मालूम ही नहीं पड़ता। खैर, मैं चलता हूँ, आप लोग जैसा भी ठीक समझें कर लें।"

मंगतराम चल दिया। छोगालाल और गोमती एक-दूसरे का मुँह देखने लगा।

3

रविवार के दिन नारायण चौपाल में स्कूल के बच्चों के साथ गाना-बजाना करता है। आज रविवार है, इसलिए चौपाल

ां भीड़ खूब है। ठीक वक्त पर नारायण चबूतरे पर आकर बैठा और सामने शोर मचाते हुए लोगों से बोला–"आप अब चुप हो जाओ और गाने से पहले एक छोटी-सी बात सुनो। हज़ारों साल पहले महाभारत का युद्ध हुआ था। यह तो सभी मानते हैं कि इस युद्ध में पांडव जीते थे और कौरव हार गए थे। युद्ध खत्म होने के बाद अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा कि प्रभु यह हुआ कैसे? कौरव सौ थे, तो भी हार गए और हम पाँच होकर भी जीत गए–यह सुनकर भगवान श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन, वो सौ थे इसलिए हार गए और तुम पाँच थे इसलिए जीत गए।"

सामने बैठे सभी लोग खिलखिला कर हँस दिए। लेकिन एक तरफ बैठे छोगालाल और मंगतराम को हँसी नहीं आई।

हँसना बन्द हुआ तो नारायण ने कहा–"हँसने की बात नहीं, समझने की बात है। हाँ, तो श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि जीत संख्या की नहीं संगठन की होती है। कौरव सौ होकर भी निकम्मे, आलसी और चरित्रहीन थे, जबकि तुम पाँच होकर भी युधिष्ठिर की आज्ञा में नियम और कायदे से रहे, इसलिए जीत गए। जहाँ संख्या ज़्यादा होती है वहाँ छीना-झपटी आपा-धापी बनी रहती है। ऐसे में प्यार और प्रेम कैसे रह सकता है! इसलिए कौरवों को हारना पड़ा।"

एकाएक छोगालाल और मंगतराम के बच्चे आपस में झगड़ने लगे और रोने-धोने की आवाज़ें आने लगीं। नारायण

ने ज़ोर से पूछा–''यह आपस में कौन मारा-मारी करता है भाई?''

एक नौजवान बीच में बोल पड़ा–''लगता है कौरव यहाँ भी आ गए।''

ज़ोर की हँसी से चौपाल गूँज उठी। नारायण ने समझाया–''नहीं, ऐसा नहीं कहना चाहिए। अच्छा, अब सुनो आगे। हमारे बुज़ुर्गों ने कहा है कि–'अति सर्वत्र वर्जयेत' यानी किसी भी चीज़ का ज़्यादा होना बुरा है। कहते हैं कि जब मति मारी जाती है तो अति शुरू होती है। अति और ठूँस-ठूँस कर खाने से पेट में खराबियाँ पैदा हो जाती हैं। अति घमण्ड के कारण ही कंस, रावण और दुर्योधन मारे गए थे। छोटी-सी नाव में तीन की जगह तेरह बैठ जाएँगे तो नाव डूबेगी ही। नाव क्यों डूबी? अति के कारण। आज इस अति पर ही मैं और स्कूल के बालक आप लोगों को एक गीत सुनाते हैं। आप लोग ध्यान और शान्ति से सुनें।''

सभी ने तालियाँ बजाईं। बच्चे देर तक तालियाँ बज़ाते रहे। नारायण ने स्कूल के बच्चों को अपने पास बुलाकर समझाया–''मेरे साथ-साथ गाना और स्कूल में जैसे मैंने बताया था वैसे ही गाना।''

बच्चों ने सिर हिलाकर हाँ कर दी तो नारायण ने गाना शुरू किया–

अति अति कर मति, अति की नहीं कहीं है गति

अति अति में लगा रहा तो तेरी रुक जाएगी प्रगति
सेठ करोड़ीमल करते थे सट्टे का व्यापार
रात दिन यही सोचा करते करूँ एक के चार
यानी अति! ...हाँ भई अति, यानी मारी गई थी मति
करूँ एक के चार तो होगा मेरा सुखी संसार
यह भी कर लूँ वह भी कर लूँ, इसको धर लूँ
उसको भर लूँ
इसमें-उसमें इधर-उधर में पड़ गया एक दिन मंदा
सेठ बेचारा तकता रह गया चौपट हो गया धँधा
धँधे के चौपट होने से लगी थी चिन्ता भारी
चिन्ता की जो चिता जली तो गले पड़ी बीमारी
सोच-सोचकर एक दिन आया रुकी हृदय की गति
इसीलिए तो कहते हैं भाई, मत कर तू अति अति...
अति अति कर मति...
इसी तरह रमुआ भी पीता था प्याले पर प्याले
अति अति में पीते पीते आये दिन फिर काले,
यानी अति!
हाँ भई अति, यानी मारी गई थी मति
कर्ज़ बढ़ गए मर्ज़ बढ़ गए कमर झुक गई आँख धँस गई
कर्ज़ मर्ज़ में नाव धँस गई
बच्चे रोते बीवी रोती रोता घर-भर सारा

अति ने मारा पहले उसको फिर से मति ने मारा
सिर धुनती थी बीवी उसको कैसा मिला यह पति
अति छोड़कर मरता यह तो हो जाती मैं सती...
अति अति कर मति...
अति के कारण रावण हारा दुर्योधन भी गया था मारा
शिशुपाल ने सिर कटवाया भाइयों ने ही घर बँटवाया
इस अति के कारण ही तो रंक हुए थे रंति–
–कौन? राजा रंति!
हाँ राजा रंतिदेव...इसीलिए...अति अति कर मति...
अति का चक्कर बुरा है प्यारे कोई न जीते
सब कोई हारे
जीवन में यदि हँसना है तो, झंझट में नहीं फँसना है तो,
अति से रहना दूर ही दूर, करती यह सब चकनाचूर
समझदार लोगों का कहना थोड़े में ही खुश हो रहना
बनी रहेगी सुमति...अति अति कर मति...कर मति...
कर मति...

गीत खत्म हुआ तो खूब ज़ोरों की हँसी गूँजी, साथ ही तालियाँ भी बजीं। रात काफी हो गई थी, इसलिए धीरे-धीरे सभी अपने-अपने घर की तरफ चल पड़े।

उस रात छोगालाल और गोमती देर तक बातें करते रहे। गोमती अपने भाग्य को रोती रही। वह जब से ब्याही

गई थी किसी भी दिन कहीं आना-जाना नहीं हुआ था। सारी उम्र बच्चों के आगे-पीछे उसी घर में कैद होकर कट गई। उसका बड़बड़ाना सुनकर तंग आया छोगालाल करवट बदलकर सो गया।

अगले दिन सुबह जब छोगालाल बस स्टैण्ड के पास अपनी दुकान पर पहुँचा तो वहाँ काफी भीड़ थी। लोगों से मालूम हुआ कि वहाँ हमेशा बैठने वाले दो भिखारी, एक तीसरे भिखारी से लड़ पड़े थे। हमेशा बैठने वाले दोनों भिखारी नहीं चाहते थे कि वहाँ कोई नया और तीसरा भिखारी आकर बैठे, क्योंकि उन दोनों के ढेर सारे बच्चे थे। नये भिखारी के आने से उनकी रोटी-रोज़ी में फर्क पड़ता था। तहसील थाने की पुलिस जीप उधर आई तो पता चला कि तीसरा भिखारी सचमुच भिखारी नहीं था बल्कि पास के गाँव रसूलपुर के स्कूल का चपरासी था। उसके आठ बच्चे थे, उनका पेट भरने की खातिर वह आए दिन स्कूल से कुछ-न-कुछ चुराकर बेचने लगा था। एक दिन पकड़ा गया और स्कूल से निकाल दिया गया। अब चोर का टीका माथे पर लगने से कोई नौकरी देने को तैयार नहीं था। इसलिए दूसरे गाँव में आकर भीख माँगना शुरू किया था। मगर पहले ही दिन पुलिस चोरी के इल्ज़ाम में पकड़कर ले गई।

लोगों के मुँह से यह किस्सा सुनकर छोगालाल को कँपकँपी आ गई। वह अपनी दुकान की तरफ बढ़ गया।

वह सोचने लगा कि क्या ज़्यादा बच्चों वाला हर बाप मुसीबतों में फँस जाता है! इसका मतलब उसे भी किसी दिन चोरी करने और भीख माँगने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। गरीबी और कर्ज़ तो मेरे सिर पर है ही। क्या होगा अब?–सोचते-सोचते वह दुकान पर जा पहुँचा। दुकान के सामने भी कुछ भीड़ थी। कालूराम बस-कन्डक्टर को रामभरोसे हलवाई और कपड़ा-व्यापारी बस्तीमल खरी-खोटी सुना रहे थे। उसने दोनों से अपने बच्चों के लिए उधार लिया था और अब चुका नहीं रहा था। बस्तीमल कह रहा था–"क्यों भाई, इन चार बच्चों को तूने क्या हमारे भरोसे पर पैदा किया था? जेब में दाम नहीं है तो बच्चों को लाड़ क्यों लड़ाते हो। और असल बात तो यह है कि ज़रूरत ही क्या है बच्चे पैदा करने की! सिर पर कर्ज़ लेकर और इज़्ज़त मिट्टी में मिलाकर बच्चों का बाप बनना क्या किसी डॉक्टर-हकीम ने बताया है? ऐसा बाप बनने से तो निपूता रहना भला।"

कालूराम अब तक सिर नीचा किए सुन रहा था। उससे न रहा गया तो बोला–"क्या आज मेरी पत ही उतार लोगे?"

जवाब रामभरोसे हलवाई ने दिया–'अपनी पत अपने हाथ होती है भैया–'रख पत रखा पत।' समझे!"

छोगालाल दुकान खोलकर बैठ गया और छज्जू का इन्तज़ार करने लगा। उसके आने पर आज उसे बस पकड़कर बादलपुर जाना था। एक व्यक्ति ने उसे बताया था कि छगन

यहाँ के एक खण्डहर में जुआ खेलता है और वहीं पड़ा रहता है। छगन का ख्याल आते ही वह फिर चिन्ता में डूब गया। यह सोचने लगा कि औलाद ज़्यादा होती है तो नालायक ही निकलती है। एक या दो बच्चे होते तो उसे भी काहे को इतना झंझट होता! क्यों तो सिर गरीबी की ओखली में जाता और क्यों कर्ज़ का मूसल सिर पर पड़ता!

तभी हार्न बजाती एक बस वहाँ आकर रुकी। मुसाफिर उतरे और इधर-उधर दुकानों पर बिखर गए। दो बड़े प्यारे और साफ-सुथरे बच्चे छोगालाल की दुकान पर आए। एक बारह साल के करीब था और दूसरा आठ-दस का लगता था। बड़े लड़के ने पैसे बढ़ाते हुए कहा–"एक पान दीजिए सिर्फ मुलैठी और इलायची डालकर।"

"सिर्फ मुलैठी और इलायची? सुपारी नहीं खाते?" छोगालाल ने पूछा।

लड़के ने कहा–"मैं नहीं, मेरी माताजी खाएँगी। हम दोनों भाइयों ने तो आज तक कभी पान नहीं खाया। बस में माताजी का जी मिचलाने लगा, इसीलिए मुलैठी और इलायची चाहिए उन्हें।"

छोटा लड़का जिसकी नज़र नीचे टिकी हुई थी नीचे झुका और ज़मीन पर पड़ी हुई अठन्नी उठाकर छोगालाल को देते हुए बोला–"सेठजी, आपकी अठन्नी।"

छोगालाल ने लड़के की तरफ देखा। उसे मालूम था

कि दुकान खोले अभी थोड़ी ही देर हुई है। अठन्नी का लेन-देन हुआ ही नहीं है। वह बोला–"मुन्ना, यह अठन्नी मेरी नहीं है। तुम रखो अपनी जेब में।"

लड़के ने अठन्नी उसकी दुकान पर रखते हुए कहा–"वाह जी वाह, जो चीज़ हमारी है ही नहीं उसे जेब में कैसे रख लें हम?"

पान लेकर दोनों बस की तरफ बढ़ गए और छोगालाल उनका जाना देखता रहा। मन-ही-मन कहने लगा कि एक ये भी बच्चे हैं जिन्हें देखकर माँ-बाप की ही नहीं, दूसरों को भी छाती ठंडी होती होगी और एक मैं हूँ जिसकी औलाद को दूसरे देखकर तो क्या खुश होंगे मैं खुद दुखी हूँ।

न जाने कब तक वह यूँ ही सोचता रहता, लेकिन तभी छज्जू आ पहुँचा। उसने छज्जू को कुछ ज़रूरी बातें बताईं और दुकान से उतरकर नीचे आ गया। जेब में कुछ पैसे डाले और अगली बस का इंतज़ार करने लगा। कुछ ही देर में दूसरी बस आई और छोगालाल उसमें जा बैठा। पाँच-सात मिनट रुकने के बाद बस सीधी सड़क पर आकर भागने लगी। छोगालाल को ड्राइवर की सीट के पीछेवाली बेंच पर ही जगह मिल गई। बस-कन्डक्टर गुलशन भी पास ही बैठा था। गुलशन अभी नया-नया कन्डक्टर बना है। कुछ बूद्धू भी है। हमेशा ड्राइवर गुमान सिंह से सवाल पूछ-पूछ बर उसे तंग करता रहता है। आज उसे लगा कि बस धीरे चल

रही है तो उसने गुमान सिंह ड्राइवर से कहा–"क्या बात है, उस्ताद, आज कुछ सुस्त नज़र आ रहे हो! गाड़ी दौड़ाओ ज़रा।"

गुमान सिंह मुस्कराकर बोला–"जल्दी का काम शैतान का, भले आदमियों का काम धीरे-धीरे ही होता है।"

गुलशन ने छेड़ा–"उस्ताद, लगता है डरते हो!"

गुमान सिंह ने कहा–"अरे मूर्ख, तू समझदारी को डर कहता है! मालूम है, पिछले महीने तेज़ रफ्तार से चलाने के चक्कर में चार एक्सीडेंट हो चुके हैं। इसी सड़क पर दो बार बसें टकरा गई हैं!"

गुलशन ने लापरवाही से कहा–"अरे, कहीं कुछ नहीं होता है। इस सड़क पर तो दो या तीन ही बसें आती-जाती हैं, फिर टक्कर कैसे होगी?"

छोगालाल दोनों की बातें सुन रहा था। गुलशन की बात सुनकर वह हैरान हुआ, क्योंकि इस सड़क पर तो दिन-भर बसें दौड़ती रहती हैं।

इतने में गुमान सिंह बोला–"क्या बकता है, दो या तीन बसें? बुद्धू, तू नया-नया आया है। किसने कहा तुझसे कि दो या तीन बसें चलती है यहाँ?"

गुलशन ने तुरन्त जवाब दिया–"उस्ताद, कहेगा कौन? देखो सड़क पर हर पचास गज़ पर बोर्ड लगे हुए हैं। एक आदमी, एक औरत, एक लड़का और एक लड़की की तस्वीर

है। नीचे लिखा है दो या तीन बस। मतलब यही हुआ ना कि बस में बैठना है तो अपनी बीवी और दोनों बच्चों को लेकर जल्दी आओ। दो या तीन बसें ही चलती हैं। जल्दी नहीं आओगे तो बस में जाने को नहीं मिलेगा।''

बस में बैठे जिन-जिन लोगों ने भी गुलशन की बातें सुनी, हँस दिए। गुमान सिंह को भी हँसी आ गई। उसने कहा–''इसीलिए तो सब तुझे बूद्धू कहते हैं। अरे मूरखराज, ये दो या तीन बस वाले बोर्ड अपनी बस के लिए नहीं हैं। ये परिवार नियोजन के लिए हैं। मतलब यह कि दो या तीन बच्चों से ज़्यादा बच्चे पैदा मत करो।''

छोगालाल को ऐसा लगा, मानो ड्राइवर गुलशन से नहीं, बल्कि उसी से यह सब कह रहा है। गुलशन फिर बोल पड़ा–''कमाल है, उस्ताद, हम दो बच्चे पैदा करें या सौ करें, किसी को क्या पड़ी है! मेरे दादा तो कहा करते थे–

या इलाही दे लुगाई बच्चे हो सत्तर हज़ार।

आठ डिप्टी, नौ कलेक्टर, बाकी सब तहसीलदार॥''

बस में एक बार फिर हँसी का फव्वारा छूटा। छोगालाल भी हँस पड़ा। गुमान सिंह की हँसी रुकी तो बोला–''अक्ल के दुश्मन, सत्तर हज़ार छोड़कर अगर सात भी हो गए तो तेरी मैया मर जाएगी। वे खाएँगे किसे! तुझे? दो-तीन बच्चे तो माँ-बाप सँभाल लेते हैं। पाँच-सात हुए तो फिर वे आदमी के बच्चे नहीं रह जाते, जानवर के बच्चे बन जाते हैं।''

छोगालाल का चेहरा एकदम सूख गया। उसने धीरे से पीछे मुड़कर देखा कि ड्राइवर सब कुछ उसी से तो नहीं कह रहा है। गुलशन ने फिर ध्यान तोड़ दिया। वह कह रहा था–"उस्ताद, तुम्हारी बात अपनी समझ में तो नहीं आती है।"

एकाएक बस धीमी होने लगी। फिर ज़ोर का ब्रेक लगा। ब्रेक के झटके से सभी मुसाफिर एक दूसरे पर गिरने लगे। सभी ने हैरानी से सामने देखा, जहाँ सड़क पर एक आदमी दोनों हाथ पसारे मरने की तैयारी कर रहा था। गुमान सिंह गुस्से से नीचे उतरा। तब तक खेतों से एक औरत चीखती-चिल्लाती उस आदमी से आकर लिपट गई और रोते हुए बोली–"नहीं, रमुआ के बापू, नहीं! मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगी।"

पर वह रमुआ का बापू हाथ छुड़ाकर चीखता हुआ बोला–"छोड़ दे मुझे, मैं मर जाऊँगा तो तेरी छाती ठण्डी हो जाएगी। चल हट परे!"

गुमान सिंह ने वहाँ पहुँचकर रमुआ के बापू का हाथ ज़ोर से पकड़कर डाँटा–"क्यों रे, तू मरकर हमें भी मारना चाहता है? कोई कुआँ-तालाब, नदी-खाड़ी दिखाई नहीं दी तुझे, जो मेरी गाड़ी के सामने मरने चला आया?"

वह औरत हाथ जोड़कर बोली–"नहीं, बाबू साहब, मरता कोई नहीं। इसे समझाओ, बाबू साहब, इसे समझाओ।"

कुछ मुसाफिर भी बस से उतर आए और तमाशा देखने

लगे। रमुआ का बापू कहने लगा–"अब रोती है? मेरा जीना हराम कर दिया तूने। जब देखो तब हाथ पसारे खड़ी रहती है। कहाँ से लाऊँ रोज़-रोज़? चोरी करूँ? डाका डालूँ? जेब काटूँ किसी की?"

उसकी घरवाली ने गिड़गिड़ाकर गुमान सिंह से कहा–"देखो-देखो, कैसी बातें करे हैं। मैं क्या अपने लिए माँगू हूँ। मैं तो रूखी-सूखी खाकर भी दिन पूरे कर लूँ हूँ। ना मिले तो भी मुँह लपेटकर पड़ी रहूँ हूँ, पर पेट की औलाद को तो नंगा-भूखा नहीं देखा जाता। आठ बच्चों के पेट और तन को ही सब कुछ लग जावे है। कम पड़ेगा तो और कहाँ जाऊँगी हाथ पसारने?"

कुछ झगड़ा देखकर बस के दूसरे मुसाफिर भी नीचे उतर आए। छोगालाल भी वहाँ आकर खड़ा हो गया। गुमान सिंह ने यह सब सुनकर रमुआ के बाप को डाँटा–"तू तो मरकर छुटकारा पा लेगा, लेकिन उन आठ बच्चों का क्या होगा? इस बेचारी का क्या होगा? जब तेरी इतनी आमदनी और कमाई नहीं थी तो इतने बच्चे पैदा ही क्यों किए? मरकर उन्हें आवारा और लफँगा बनने के लिए छोड़ जाएगा? तू मर गया तो बच्चे जीते-जी मर जाएँगे।"

छोगालाल को लगा कि गुमान सिंह उसका कान पकड़कर खींच रहा है। रमुआ का बापू बोल पड़ा- मैं क्या ज़िंदा हूँ, मरे से भी बुरा हूँ।"

गुमान सिंह ने फिर डपट दिया—"बुरा है तो अपनी करनी से बुरा है। किसी और ने तो बुरा नहीं किया तेरा। तूने क्या समझा था, बच्चों के लिए रोटी-कपड़ा आसमान से टपकेगा? पैदा किया है तो उनका पेट भी भरना पड़ेगा। चल, जा घर इसके साथ!"

गुमान सिंह ने उसका हाथ पकड़कर ठेलते हुए उसकी



घरवाली के साथ भेज दिया। दोनों खेतों की तरफ चले गए। सभी जल्दी से बस में बैठे और बस चल पड़ी।

कन्डक्टर गुलशन ने कहा–"उस्ताद, यह मर जाता तो हम फँस जाते। खुद तो है ही मरा और फँसा हुआ।"

गुमान सिंह ने मुस्कराकर कहा–"अब बोल, आठ बच्चों का बाप होकर यह मरा और फँसा हुआ है तो तू सत्तर हज़ार बच्चों का बाप बनकर कितनी देर तक जी सकेगा?"

गुलशन ने कानों को हाथ लगाकर कहा–"बाप रे बाप, मुझे क्या मालूम था कि ज़्यादा बच्चों का बाप बनने में ऐसी मुसीबतें गले पड़ती हैं। उस्ताद, मैं तो अब शादी ही नहीं करूँगा।"

सारे मुसाफिर हँस पड़े।

गुमान सिंह ने झाड़ दिया–"तू भी गधा है एक नम्बर का। खाएगा तो शक्कर खाएगा, नहीं तो नमक भी नहीं खाएगा। अबे बुद्धू, शादी कर और दो बच्चों का बाप बन।"

गुलशन ने भी हाँ कर दी–"हाँ उस्ताद, यह ठीक रहेगा। दो बच्चे होंगे तो अच्छी खिला-पिला सकेंगे, पढ़ा-लिखा सकेंगे, उन्हें भला और शरीफ आदमी भी बना सकेंगे। ऐसे में गरीबी भी पास क्यों आएगी?"

छोगालाल के कान फिर खड़े हो गए। उसे बार-बार शक होने लगा कि ये दोनों उसी से तो कुछ नहीं कहना चाहते। बस फिर धीमी होने लगी। गुमान सिंह ने देखा

कि आनेवाले मोड़ पर एक ट्रक उल्टा पड़ा है। दो सिपाही वहाँ खड़े हैं। ट्रक पर लदी बोरियाँ इधर-उधर जा पड़ी थीं, जिनमें से अनाज भी बिखरकर इधर-उधर फैल गया था। गुमान सिंह ने जल्दी से मोड़ पार किया और बस भगा दी। मुसाफिरों ने खिड़की से झाँककर वह नज़ारा देखना चाहा, पर तेज़ी से भागती बस से कुछ देख न सके।

गुलशन ने हक्का-बक्का होकर कहा—"उस्ताद, ट्रक उल्ट गया। पता नहीं बेचारे ड्राइवर और क्लीनर की क्या हालत हुई होगी!"

गुमान सिंह ने उदास होकर कहा—"हाँ, रफ्तार तेज़ होती है तो गाड़ी मोड़ पर उलट ही जाती है। रमुआ के बापू ने भी ज़िन्दगी की सड़क पर बच्चे पैदा करने की रफ्तार तेज़ रखी तो ज़रूरतों के मोड़ पर उसकी गाड़ी भी उलटते-उलटते बच गई। पर मैं तो अब बस की रफ्तार तेज़ करता हूँ।"

सचमुच ही उसने बस की रफ्तार तेज़ कर दी। गुलशन ने घबराकर कहा—"यह क्या कर रहे हो उस्ताद? खुद ही तो कह रहे हो कि तेज़ रफ्तार से गाड़ी उलट जाती है। ज़रा धीरे चलाओ उस्ताद, धीरे। रमुआ के बापू की गाड़ी भी तेज़ रफ्तार से उलटती-उलटती बची। यह देखकर और जानकर मुझे अब तेज़ रफ्तार से डर लगने लगा है। मान जाओ उस्ताद!"

गुमान सिंह ने कहा—"फिर कहेगा कि मैं डरपोक हूँ—डरता हूँ तेज़ चलाने से?"

गुलशन गिड़गिड़ाया—"जो कहे उसके मुँह में खाक, नौ चूल्हों की राख। काहे को कहूँगा मैं ऐसा? समझदारी को भला डर कहते हैं क्या?"

बस के मुसाफिर दोनों की बातें सुनकर हँस रहे थे, लेकिन छोगालाल सोचने लगा कि बादलपुर आए तो वह उतरे। कुछ देर बाद बादलपुर गाँव आया। बस की रफ्तार धीरे हुई और स्टैण्ड पर रुक गई। छोगालाल उतरा और मन्दिर के खण्डहर की तरफ चल दिया।

4

कई दिन से छगन घर नहीं आया था। गोमती ने भाग्य को कोसते हुए उसे ढूँढ लाने को कहा था। बस से उतरकर छोगालाल पुराने मन्दिर की तरफ बढ़ गया। ज्यों-ज्यों वह मन्दिर वाले खंडहर की तरफ बढ़ने लगा उसे अपने नालायक बेटे छगन का ख्याल भड़काने लगा। खण्डहर के बिल्कुल पास पहुँचा तो उसे आपस में बहस और गाली-गलौच करने की आवाज़ें आईं। वह टूटी दीवार को पार करके भीतर की तरफ जा पहुँचा। चार लड़कों के साथ छगन जुआ खेल रहा था। एक लड़के की नज़र उस पर पड़ी तो वह चीख पड़ा—"अबे छगन, तेरा बाप!"

चारों जल्दी से खड़े हो गए। सभी के हाथ में ताश के पत्ते थे। छगन खड़ा था और छोगालाल उसे घूरता रहा। बाकी तीनों लड़कों ने जल्दी से ज़मीन पर रखे पैसे बटोरे और वहाँ से भागे। छोगालाल छगन के बिल्कुल पास आया और एक ज़ोर का थप्पड़ उसके गाल पर मारा। फिर गुस्से से बोला–"नाम उजागर कर रहा है अपने बाप-दादाओं का! इसीलिए पैदा किया था तुझे कि बड़ा होकर हमारी छाती पर मूँग दले? इससे तो अच्छा था कि तू पैदा होते ही मर गया होता। बोल, जवाब दे, क्यों सता रहा है हमें?"

हाथ की ताश एक तरफ फेंककर गाल सहलाते हुए छगन ने कहा–"बापू, तुमने मुझे किसलिए पैदा किया था, यह तो मुझे नहीं मालूम, पर इतना ज़रूर मालूम है कि पैदा करने के बाद तुमने हमारी देखभाल बिल्कुल नहीं की। सच्ची बात तो यह है बापू कि तुमने हमें पैदा किया नहीं, हम पैदा हो गए।"

छोगालाल चीख पड़ा–"बेहया! बेशर्म!! बेगैरत!!!"

उसकी आवाज़ से सारा खण्डहर गूँज उठा। आगे बढ़कर एक और थप्पड़ उसने छगन के मुँह पर दे मारा। गुस्से के मारे उसकी आँखों से अँगारे निकलने लगे। मुँह से थूक उछलने लगा। वह फिर बोला–"बदज़ात, तेरी ज़बान इतनी लम्बी हो गई है कि तू अपने बाप के सामने बेहूदगी से बात करे! कहाँ से सीखा है ये सब? बोल, जवाब दे?"

छगन ने बिना डरे जवाब दिया—"सच लगनेवाली बेहूदी बात भी बेटे को नहीं करनी चाहिए, मगर दुख देने वाले बेहूदा काम करने की माँ-बाप को छूट है?"

छोगालाल फिर भड़का—"ज़बान को लगाम देगा या और दूँ दो-चार हाथ!"

छगन ने ठण्डी आवाज़ में कहा—"तुम बाप हो मेरे, जितने भी हाथ दोगे खा लूँगा, लेकिन दुनिया में इंसाफ भी कोई चीज़ है। सारा कसूर और सारे थप्पड़ मेरे ही हिस्से में आए हैं! तुम्हारे हिस्से में कोई कसूर नहीं? सौ थप्पड़ मुझे मारने के बाद दो थप्पड़ तो अपने गाल पर भी मारो। कसूर करो तुम और थप्पड़ खाऊँ मैं! यह कौन-सी बात हुई?"

छोगालाल ने आँखें दिखाईं—"तू चुप होता है या नहीं?"

पर छगन चुप नहीं हुआ। उसने कहा—"मेरे चुप हो जाने से दुनिया के दूसरे बेटे चुप होकर नहीं बैठेंगे। सब बेटे अपने बाप से सवाल करेंगे, जवाब माँगेंगे। बापू, तुम बार-बार मुझसे जवाब माँग रहे हो कि मैं जुआ क्यों खेलता हूँ, चोरी क्यों करता हूँ, बदमाश क्यों हो गया हूँ, मगर आज मैं तुमसे जवाब माँगता हूँ कि तुमने क्यों खेला जुआ हम भाई-बहिनों की ज़िन्दगी के साथ? मैं तो सिर्फ ताश और पैसों से जुआ खेलता हूँ, पर तुमने तो जीती-जागती ज़िन्दगियों से जुआ खेला है। अगर मेरी ज़िन्दगी से तुम्हारे हाथों जुआ न खेला जाता तो आज मैं भी जुआ न खेलता।"

छगन के मुँह से आज ऐसी बातें सुनकर छोगालाल की आँखें फटी की फटी रह गईं। उसका गुस्सा हैरानी में बदलने लगा। फिर भी कड़ककर उसने कहा—क्या बकता है नालायक?"

छगन ने कहा—"सच चुभने लगा है, बापू? पान-बीड़ी की छोटी-सी दुकान और छोटी-सी आमदनी में परिवार भी छोटा रखना था। छदामी के पैदा होने के बाद तुम्हारे पास कोई खबर आई थी कि तुम धन्ना सेठ हो जाओगे? हम तीन ही रहते तो तुम हमें अच्छी तरह खिला-पिला सकते थे। मुझे याद है, बचपन में तुमने मुझे कितना खिलाया-पिलाया और लाड़-प्यार किया। मगर छज्जू के आने के बाद मेरा लाड़-प्यार आधा रह गया। ज्यों-ज्यों हमारे भाई बढ़ते गए, हमारे पेट की रोटी और तन का कपड़ा घटता गया। यहाँ तक कि रोटी माँगकर या चुराकर खानी पड़ी और नंगा फिरना पड़ा। पान-बीड़ी की दुकान करनेवाले मामूली से दुकानदार की हैसियत तो इतनी ही होती है कि वह दो या तीन बच्चों को पाल सके। अगर वह सात बच्चे पैदा करेगा तो दो या तीन बच्चों का खाना-कपड़ा सात बच्चों में बाँटना पड़ेगा। इससे न तो किसी का पेट भरेगा न तन ढकेगा। अपना पेट भरने के लिए ऐसी औलाद चोरी करती है तो क्या बुरा करती है? और इसके लिए वह खुद कसूरवार कैसे हैं? सज़ा

के नाम पर सारे थप्पड़ बेचारी ऐसी औलाद के गाल पर ही क्यों पड़ने चाहिए? ये थप्पड़ तो बाप के हिस्से में आने चाहिए।''

दुख और हैरानी से छोगालाल बोला–''क्या कह रहा है तू?''

छगन ने कहा–''आज तो सिर्फ छगन कह रहा है, मगर कल हर बेटा अपने बाप से यही कहेगा। सब बेटों की ज़बान पर यही सवाल होंगे और दुनिया का कोई भी बाप इन सवालों का जवाब देने की हालत में नहीं होगा। मैं तुमसे पूछता हूँ, बापू, मुझे चोर किसने बनाया? मैं चोर क्यों बना? अगर



तुमने मेरी ज़िन्दगी न चुराई होती तो क्या मैं चोर बन सकता था? मुझसे बड़े चोर तो तुम हो बापू।"

छोगालाल भौंचक्का रह गया। उसका मुँह खुला-का-खुला रह गया और वह सिर्फ इतना-भर कह सका—"छगन!"

छगन कहता रहा—"मैं ठीक कह रहा हूँ। हर चोर चोरी तब करता है जबकि उसकी ज़िन्दगी चोरी जा चुकी होती है और उसकी ज़िन्दगी को चुराते हैं उसके माँ-बाप। तुमने सात बच्चों को नहीं सात चोरों को जन्म दिया है बापू। सात आवारा और निकम्मे प्राणियों को जन्म दिया है। अगर हम दो-तीन भाई होते तो अच्छे इंसान बनते। ऐसे में न तो हमारी ज़िन्दगी की चोरी होती न हम चोर बने होते। यह तुमने क्या किया बापू? है जवाब तुम्हारे पास?"

छोगालाल दोनों हाथों से सिर पकड़कर वहीं एक पत्थर पर बैठ गया। फिर बोला—"बाप की पत रखना भी भूल गया तू?"

छगन बोला—"पत रखने का काम तो ज़िन्दा लोगों का है, मैं तो लाश हूँ। तुमने मेरी पत रखी होती और मुझे ज़िन्दा रखा होता तो मैं भी तुम्हारी पत रखता। बापू, तुमने हमें जन्म तो दिया, मगर जन्म देने की भाग-दौड़ में हमें जीवन देना भूल ही गए। यह सच है कि हम सातों भाई-बहिनों को तुमने जन्म दिया है, मगर जीवन तो एक को भी नहीं दिया। जब हम सातों भाई-बहन मक्खी, मच्छर,

कीड़े-मकोड़ों की तरह ज़िन्दा हैं जो गंदगी फैलाने के सिवाय और कुछ भी नहीं कर सकते। जिनसे लोग प्यार नहीं, नफरत करते हैं और हमारे लिए नफरत का यह दरवाज़ा तुमने ही खोला है, बापू। अब कैसे रखी जाए तुम्हारी पत? तुम्हारी पत हम रख सकें, इस लायक तुमने छोड़ा ही कहाँ है हमें?"

छोगालाल रुआंसा होकर बोला—"अब बस कर छगन!"

पर छगन चुप नहीं रहा। वह बोलता ही गया—"बापू, आज तुम मुझे बस करने के लिए कहते हो! अगर हम तीन भाइयों को जन्म देने के बाद तुम खुद बस कर देते तो क्या आज यह नौबत आती? सोचो बापू, सोचो और जवाब दो। मेरे मुँह से निकली हुई कड़वी सच्चाई तुमसे बरदाश्त नहीं हो रही है तो तुम्हारी दी गई कड़वी ज़िन्दगी हम भाई-बहिन कैसे बरदाश्त करते होंगे?"

छोगालाल ने तड़प कर कहा—"तू इतना सयाना कब से हो गया रे छगन?"

छगन ने कहा—"मार, चोट और घाटा खाया हुआ इंसान अपने आप सयाना हो जाता है बापू। जिस दिन से पता चला कि पास में जान तो है मगर जीवन नहीं है उसी दिन से अक्ल ने साथ देना शुरू कर दिया और जिस दिन यह पता चला कि जीवन तो चोरी चला गया है उस दिन मैं चोर बन गया। अब वह वक्त आ रहा है जब चोर को नहीं बल्कि चोर-को-चोर बनाने वाले को पकड़ा जाएगा। दुनिया

भर के सभी चोरों के बापों को पकड़कर जेल में ठूँस दिया जाएगा। चोर, आवारा, हत्यारे और बदमाश लोगों की आबादी बढ़ाने वाले ढेर सारे बच्चों के बापों को अब फाँसी दी जाया करेगी।''

छोगालाल ने गिड़गिड़ाकर कहा–''अब चुप हो जा बेटा!''

मगर बेटा चुप नहीं हुआ। वह कहता ही रहा–''क्या होगा मेरे चुप होने से? दुनिया तो चुप नहीं होगी। आवारा की तरह इधर-उधर धक्के खाती हम जैसी औलाद को लोग कुत्ता कहते हैं। कुत्ता सुनकर अब मुझे शर्म या गुस्सा नहीं आता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कुत्तों के परिवार में ही एक साथ छः या आठ बच्चे पैदा होते हैं। बड़े होकर नालियाँ चाटना, भौंकना, काटना यही उनका काम होता है। मेरे जैसों का काम भी यही है। फर्क कहाँ रहा मुझमें और कुत्ते में? लोग ठीक ही तो कहते हैं। शेर बनकर ज़िन्दगी गुजारने का तुमने हमें मौका ही नहीं दिया। शेर के परिवार में एक या दो बच्चे पैदा होते हैं जो बड़े होकर जंगल के राजा बनकर शानदार ज़िन्दगी जीते हैं। पर हमारे नसीब में ऐसी ज़िन्दगी कहाँ? तुम्हारी करनी हम सभी भाई-बहिनों का खोटा नसीब बन गई।''

इस बार तो छोगालाल रो पड़ा। रोते-रोते खड़ा हुआ और पाँव का जूता निकालकर छगन की तरफ बढ़ाते हुए

बोला–"ले मुझे जूते मार ले, मगर बोल मत। मार! अब नहीं सुना जाता मुझसे। मैं हाथ जोड़ता हूँ। पाँव पड़ता हूँ तेरे। भगवान के लिए अब चुप हो जा।"

छोगालाल सचमुच हाथ जोड़ते हुए उसके पाँवों में पसर गया। छगन का सारा गुस्सा आँसू बनकर फूट पड़ा। वह भी फुक्का फाड़कर रो पड़ा और बोला–"यह क्या करते हो बापू?"

उसने छोगालाल को उठाया। बाप-बेटे दोनों गले मिलकर रो पड़े। देर तक रोने के बाद मन हल्का हुआ तो छोगालाल ने आँसू पोंछते हुए कहा–"चल, घर चल!"

छगन ने कहा–"क्या करूँगा घर चलकर! माँ तो मेरा मुँह भी देखना नहीं चाहती।"

छोगालाल ने समझाया–"भूल जा पिछली बातें। तूने मेरी आँखें तो खोलीं, मगर देर बहुत हो चुकी है। मैं फिर भी कोशिश करूँगा कि तुम सभी भाई-बहिन अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सको। मेरी एक बात मानेगा?"

"क्यों नहीं मानूँगा? बात तो बताओ!"

"आज से तू दुकान पर बैठ। सभी कुछ सँभाल। मैं शहर निकल जाता हूँ। दोनों मिलकर कमाएँगे तो बुरे दिन कट जाएँगे। शहर जाकर मैं छज्जू को भी बुला लूँगा। सयाने कहते हैं–बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले।"

बातें करते-करते दोनों खंडहर से बाहर आए। छोगालाल

कह रहा था–"मेरे खातिर न सही अपने छोटे भाई-बहिनों के खातिर ही मेरी बात मानकर दुकान को सँभाल ले! बोल, मानेगा मेरी बात?"

छगन ने कहा–"जिससे घर की हालत सुधरेगी यह बात क्यों नहीं मानूँगा!"

दोनों बस स्टैण्ड की तरफ बढ़ गए।

5

सारे गाँव में बिजली की तरह खबर फैल गई कि छोगालाल नौकरी-धँधे के लिए शहर जा रहा है। सुबह-सुबह अपनी गठरी और पेटी तैयार करके वह आँगन में आ बैठा। गाँव वाले आते-जाते उसे नेक सलाह या दुआएँ देने लगे। बूढ़े भेरू काका ने उससे कहा–"भैया अब जा रहे हो तो सँभलकर जाना और सँभलकर रहना। शहर का मामला है। वहाँ की हवा अच्छी नहीं होती। जगदीश को गए दस साल हो गए। पलटकर बन्दे भगवान ने कभी गाँव का मुँह नहीं देखा। कहते हैं कोठी-बंगला बना लिया है शहर में। भैया तू न हमें भूल जाना।"

छोगालाल अपने बच्चों से घिरा हुआ था, बोला–"कैसी बातें करते हो काका! भला तुम्हें कैसे भूल जाऊँगा?"

काका ने मौका देखकर अपने मतलब की बात कही–"और हाँ, शहर में तुम अपने पाँव जमा लो तो रघुवीर को भी अपने पास बुलाकर किसी काम-धँधे में जुटा देना। इस बुढ़ापे में पाँचों साथ छोड़ गए। कोई किसी शहर में जा बसा तो कोई किसी गाँव में। बूढ़े बाप और छोटे भाई की सुध-बुध ही नहीं रही किसी को। रात-दिन इस रघुवीर की चिन्ता खाए रहती है मुझे।" कहते-कहते भेरू काका रो पड़े।

गोमती ने तसल्ली दी–"नसीब का लिखा कौन मेट सकता है भेरू काका!"

काका ने गोमती की बात काटते हुए कहा–"नहीं गोमती, यह नसीब का लेखा नहीं। असल बात कुछ और ही है। मैं पाँचों को बचपन में अच्छी तरह पाल नहीं सका। ढंग से खिला-पिला नहीं सका, देखभाल नहीं कर सका तो अब वे भी मेरी देखभाल क्यों करें! मेरे बुढ़ापे में मेरा ख्याल क्यों करें? टूटती इस उम्र में वे भी मुझे क्यों सँभालेंगे, जब बचपन में मैंने ही उन्हें नहीं सँभाला। जैसी करनी वैसी भरनी। जो बेटे बड़े होकर अपने माँ-बाप को छोड़कर अलग हो जाते हैं उनको शायद बचपन में माँ-बाप का सहारा नहीं मिलता होगा, तभी तो वे छोड़ जाते हैं।" भेरू काका फिर रोने लगे।

छोगालाल को पसीना आ गया। उसने तसल्ली दी–"मन

छोटा मत करो काका। मैं अपनी भरपूर कोशिश करूँगा। रघुवीर का कुछ काम हो ही जाएगा।''

तभी पड़ोस की मौसी बोल पड़ी–''भैया छोगालाल, मेरे रामू का भी ख्याल रखना। बेचारे से खेतीबाड़ी तो होती नहीं। वहीं कोई छोटी-मोटी नौकरी देख लेना।''

छोगालाल ने जैसे तंग आकर कहा–''मौसी, पहले एक बार शहर तो पहुँच जाऊँ, फिर धीरे-धीरे सभी को वहाँ खींच लूँगा।''

बस-स्टैंड पर पहुँचने का वक्त हो रहा था। छोगालाल ने बारी-बारी से अपने सभी बच्चों को प्यार किया। फिर रोती हुई गोमती से बोला–''बावली है तू। काम-धँधे के लिए परदेश जा रहा हूँ। दो पैसे गाँठ में हो जाएँगे तो यहीं लौट आऊँगा। इसमें दुखी होने की क्या बात है? बच्चों का ख्याल रखना।''

तभी परेशान हाल नारायण वहाँ आ पहुँचा और बोला–''अरे जगदीश काका तो शहर से हमेशा-हमेशा के लिए लौट आए हैं और तुम शहर चले हो?''

यह सुनकर सभी चौंक पड़े। छोगालाल का तो दिल ही बैठ गया। हैरान होकर उसने पूछा–''जगदीश शहर से लौट आया? पर क्यों?''

नारायण ने बताया–''मैंने पूछा कि क्यों चले आए तो कहने लगे कि भैया क्या रखा है अब शहरों में! लोग गाँव

ड़-छोड़ कर शहर में चले जाते हैं तो शहरों में बेकारी
ंगाई, गदंगी और मकानों की परेशानियाँ बढ़ती हैं। उधर
व खाली होने से खेत खाली होते हैं। खेती कम होने
पैदावार कम होती है। पैदावार कम होने से अनाज की
मी और महँगाई बढ़ गई है।"

सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

नारायण ने आगे बताया–"अब जगदीश काका यहीं
कर खेती बाड़ी करेंगे। कहते हैं कि..."

नारायण की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि एक
ड़का शोर मचाते हुए आया–"दौड़ो...दौड़ो! जल्दी आओ,
आओ!"

सभी आँगन से निकलकर बाहर आ गए। लड़का चिल्ला
ा था–"जल्दी करो! आओ मंगत काका तालाब में डूब
ा है। जल्दी करो!"

सभी तालाब की तरफ भागे और छोगालाल भी उधर
के। लेकिन रास्ते में ही कुछ आदमी मंगतराम को लिए
की तरफ आ रहे थे। मंगतराम बेहोश था। उसे जल्दी-जल्दी
लाया गया। घर में कोहराम मच गया। उसकी घरवाली
छाती पीटकर रोने लगी। सोना के मुँह से भी चीखें
कलने लगीं। रोते-रोते उसने कहा–"यह सब मेरे ही
रण हुआ है। बाबा मेरे कारण मरना चाहते हैं। इससे
अच्छा है कि मैं ही मर जाऊँ।"

मंगतराम को खाट पर लेटाया गया। खाट के चारों तरफ लगी भीड़ को हटाकर नारायण उसके हाथ-पाँव सहलाने लगा। सोना की माँ छाती पीटते हुए कहने लगी–"फूट गए मेरे भाग्य। सोना के लिए लड़का आज नहीं तो कल मिलेगा। इसमें जी छोटा करके जान देने की क्या आ पड़ी?"

सोना अलग सिसक रही थी–"जड़ तो मैं हूँ। न मैं पैदा होती न बाबा परेशान होते।"

एक बूढ़ी-सी औरत ने माँ-बेटी दोनों को डाँटा–"फालतू बातें बाद में कर लेना। अभी चुप रहो।"

नारायण, छोगालाल और भेरू काका सभी ने मिलकर मंगतराम को सँभाला। धीरे-धीरे उसे होश आया। होश आते ही बड़बड़ाने लगा–"कहाँ हूँ मैं? कैसे आया यहाँ? कौन लाया मुझे? नहीं, मुझे मरने दो। मरने दो मुझे। मैं अब जीना नहीं चाहता।"

भेरू काका ने डाँट पिलाई–"अच्छा-अच्छा, मर जाना। कोई अच्छा-सा दिन देखकर मरना। आज तो दिन भी अच्छा नहीं है।"

मंगतराम ने खाट से उठने की कोशिश की और बोला–"मैं आदमी ही अच्छा नहीं हूँ। अपने बच्चों के लिए कुछ कर नहीं सकता। ऐसे आदमी को जीने का हक ही क्या है?"

उसकी बात सुनकर सोना और उसकी माँ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। मंगतराम के मन की पीड़ा को सिर्फ छोगालाल

समझ रहा था। उसने उसका हाथ अपने हाथ में थामकर ा–"मन इतना छोटा क्यों करते हो भाई? सब ठीक हो एगा।"

मंगतराम बोला–"कैसे हो जाएगा ठीक? कब हो जाएगा क? कब हो जाएगा ठीक? कौन करेगा ठीक? अब तो ा डूबी ही समझो।"

नारायण को गुस्सा आ गया तो उसने तमतमा कर ा–"काका, मेरी ज़बान मत खुलवाओ। मैं इस वक्त बोलूँगा तो छोटे मुँह बड़ी बात होगी। तुम बेकार की ों कर रहे हो। करनी तुम करोगे सज़ा पाएँगे तुम्हारे ाले, तुम्हारे बच्चे?"

मंगतराम ने उठने की कोशिश की, मगर छोगालाल ने पकड़ लिया। वह फिर ज़ोर लगाकर उठने की कोशिश ते हुए बोला–"कौन सज़ा पाएँगे और कौन आराम, मैं ा जानूँ। आप मरे तो जग परलोक। मैं तो छूट जाना ता हूँ इस चोले से।"

इस बार सोना की माँ को भी गुस्सा आ गया। ा-चीखते वह बोली–"मरना है तो हम सबको मारकर र मरो। मरने-मरने की रट लगा रखी है। पहले नहीं या। चद्दर छोटी हो तो पाँव इतने लम्बे क्यों पसारे! चल सोना, तू भीतर जा घर में!"

माँ की डाँट सुनकर सोना अपनी दोनों छोटी बहिनों

को लेकर भीतर चली गई। नारायण ने भी कड़ककर कहा–''पहले इन बच्चों के खाने-पीने का इन्तज़ाम कर दो फिर मर जाना आराम से। कोई नहीं रोकेगा तुम्हें। मगर इन लोगों को मुसीबत और मझधार में छोड़कर मरना चाहोगे तो कोई नहीं मरने देगा।''

अब तक काफी भीड़ जमा हो गई थी। छोगालाल की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। जगदीश के शहर से लौट आने पर उसका दिल बुझ-सा गया था। शहर जाने का उसका इरादा भी ठण्डा हो गया। वह यह भी समझ रहा था कि मंगतराम और उसकी मुसीबत एक ही है। मंगतराम भी ज़्यादा बच्चों के कारण ही मरने पर उतारू हुआ है। सोना की शादी का खर्च इसके पास नहीं है। कई जगह शादी की बात चली और टूट गई, यह भी उसे मालूम है। इसी दुख-से-दुखी होकर मंगतराम मरने चला था। मुझे भी तो छगन का दुख है। सोचा था कि छगन की शादी में दहेज मिलेगा तो सिर का कुछ कर्ज़ हल्का होगा। मगर ऐसा कुछ होता लगता नहीं। शहर जाना भी होगा नहीं। क्या किया जाए? क्यों न छगन और सोना की शादी पक्की कर दी जाए। मंगतराम का दुख भी टल जाएगा और छगन की नाक में नकेल भी पड़ जाएगी। वैसे भी वह अब सुधर तो गया ही है।

सोच-विचार कर उसने मंगतराम से कहा–''देखो भाई

मंगतराम, जो मूर्खता तुमने की है वही मूर्खता मैंने भी की है। हम दोनों को मान लेना चाहिए कि हम दोनों मूर्ख हैं। अब तो ऐसा कुछ काम करो कि हम दोनों की मूर्खता हमारी सन्तान को न भुगतनी पड़े और आगे चलकर हमारी सन्तान वह मूर्खता न करे जो हम दोनों करते रहे हैं।''

नारायण ने मंगतराम का हौसला बढ़ाते हुए कहा—''यह हुई कुछ बात। जब आदमी अपनी मूर्खता को मान ले तो समझ लो वह अब मूर्ख नहीं रहा, समझदार हो गया है। कहते हैं कि सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो भूला



नहीं कहाता। पर मंगत काका तो चुप ही हैं, कुछ बोलते ही नहीं।''

मंगतराम भड़क उठा–''क्या बोलूँ? अपनी मूर्खता और शर्म के मारे मुँह काला करने चला था।''

छोगालाल ने कहा–''अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं। तुम मुँह काला करने किसलिए चले थे, मुझे मालूम है। अब तो हम एक-दूसरे का मुँह लाल करेंगे।''

छोगालाल की बात से सभी चौंक पड़े। मंगतराम ने भी हैरानी से उसका मुँह देखा। सोना की माँ ने पूछा–''क्या कह रहे हो?''

''हाँ, हम दोनों एक-दूसरे के मुँह पर गुलाल मलेंगे, समधी बनकर। सोना आज से मेरी हुई और छगन तुम्हारा हुआ।''

मंगतराम जल्दी से उठा और छोगालाल के पाँवों में गिर पड़ा। फिर सिसकते हुए बोला–''तुमने मुझे उबार लिया छोगालाल।''

सोना की माँ हाथ जोड़कर कुछ कहने वाली थी, मगर रो ही पड़ी। फिर पल्ला सँभालकर भीतर चली गई सोना के पास।

नारायण ने मुस्कराकर कहा–''तो अमावस्या के बाद पूर्णिमा आते-आते महीना बीत जाता है, मगर यहाँ तो घण्टे भी नहीं बीते। फटाफट पूर्णमासी हो गई!''

छोगालाल ने मंगतराम को उठाकर छाती से लगाया। फिर खाट पर बैठाते हुए कहा–"पिछली बातें भूल जाओ और जल्दी से दिन पक्का करो।"

मंगतराम ने हाथ जोड़कर कहा–"मेरे सिर पर बंसीलाल का कर्ज़ है। मैं ज़्यादा खर्च नहीं कर सकूँगा।"

छोगालाल ने उसका हाथ पकड़कर कहा–"बंसीलाल से पूछना तो वह बताएगा कि छोगालाल के सिर पर मंगतराम से ज़्यादा कर्ज़ है। मैं तो बहुत कम खर्च में काम करूँगा। अब कर्ज़ बिल्कुल नहीं लूँगा।"

नारायण ने दोनों को बधाई दी और धीरे-धीरे सभी अपने-अपने घर की तरफ चल दिए।

6

गाँव के सारे लोग खुशी से नाच उठे। सबसे ज़्यादा खुश था लखन। उसका सारा कर्ज़ माफ हो गया। मंगतराम भी खुश था। देने के लिए दहेज तो उसके पास था नहीं, मगर गाँववालों की शर्म से मन छोटा था। अब दहेज को गैरकानूनी करार दिया गया था इसलिए लोगों की शर्म भी नहीं रही। उसके साथ-साथ छोगालाल को भी तसल्ली हुई कि अब वे अपनी चीज़ें बंसीलाल के यहाँ से छुड़ा सकेंगे। हाँ, एक बात का दुख दोनों को था।...

खेती के लिए ज़मीन और रहने के लिए मकान मिलने की सुविधा उन्हें नहीं मिल रही थी। गाँव के दूसरे कई लोगों को खेती करने के लिए ज़मीन और रहने के लिए पक्के मकान मिलने वाले थे। लखन को तो मकान, ज़मीन और बैंक से नकद सहायता भी मिलने वाली थी। किसनिया, पूनिया और छोटू को ज़मीन के साथ रहने के लिए मकान मिलने का इन्तज़ाम था, क्योंकि इन सब लोगों के दो या तीन ही बच्चे थे। इस मामले में मंगतराम और छोगालाल दिल मसोस कर रह गए। ढेर सारे बच्चों के पिता होने के कारण उन्हें ये सुविधाएँ नहीं मिल सकी थीं।

दोनों ने तय किया कि छगन और सोना की शादी करने के बाद दोनों एक बार शहर जाकर अपना नसीब आजमाएँगे। दोनों ने अपना विचार नारायण के सामने रखा तो उसने कहा–"समझदारी की सड़क पकड़ने के बाद फिर ने नासमझी की पगडंडी पर चलने का इरादा कैसे हो गया?"

छोगालाल ने अपनी मजबूरी बताई–"देखो भाई, जो किया है वह भुगतना तो पड़ेगा ही। मिरच मुँह में रखी है तो अब शक्कर का स्वाद कहाँ से आएगा। हम दोनों का परिवार बड़ा है, आमदनी कम है। बच्चों को पालना भी है। खर्च पूरा कैसे होगा? उसे पूरा करने के लिए शहर जाने का इरादा है।"

नारायण ने चेताया–"जगदीश काका लौट आए, फिर भी शहर जाने का इरादा है?"

मंगतराम ने दलील दी–"जगदीश दस साल तक तो रहा है वहाँ पर। कुछ-न-कुछ तो कमाकर लाया ही होगा। फिर हमें अपने बच्चों को भी तो भूखों मरने से बचाना है।"

नारायण ने कुछ झुँझलाकर कहा–मंगत काका, धरती पर भूख पहले आई या अन्न पहले आया?"

उसका यह अनोखा सवाल सुनकर दोनों एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। छोगालाल ने कुछ सोचकर कहा–"मैं समझता हूँ भूख पहले आई।"

नारायण ने बात काट दी–"काका, तुम हमेशा गलत समझते हो, इसीलिए गलत कहते और करते हो।"

मंगतराम बीच में बोला–"तो पहले अन्न आया होगा।"

तीनों हँस पड़े। नारायण ने कहा–"हाँ दो में से एक तो ज़रूर पहले आया। भूख नहीं तो अन्न पहले आया होगा। मगर कैसे? इसका सबूत क्या है हमारे पास कि पहले भूख नहीं अन्न आया है धरती पर?"

दोनों फिर हैरान होकर इधर-उधर देखने लगे। नारायण ने ही बताया–"एक तो आप दोनों मुझसे बड़े, दूसरे आप दोनों की समझ-बूझ मुझसे बड़ी। अब मैं क्या बताऊँ! मगर यह बात तो सारी दुनिया जानती है कि माँ की गोद में बच्चे के आने से पहले उसके आँचल में बच्चे का भोजन आ जाता है।"

छोगालाल ने हाँ भरी–"हाँ भाई आ तो जाता है।"

नारायण ने समझाया–"मतलब यह कि धरती पर पहले

अन्न आता है और उसके खाने वाले बाद में आते हैं। यानी भूख बाद में आई है। यह धरती भी तो हमारी माँ है। इस देश को भी हम भारत माता कहते हैं। इस माता की गोद में बैठकर अगर हम कहें कि हम भूखे हैं तो यह माँ का अपमान नहीं होगा क्या? माँ की गोद में बच्चा भूखा रह सकता है कभी? माँ के हरे आँचल को और ज़्यादा हरा करें तो सभी की भूख मिटेगी। भूख के लिए भगवान ने पेट तो एक ही दिया है, मगर भूख मिटाने के लिए हाथ दो दिए है। भूख मिटाने वाले हाथों की ताकत पेट की भूख से बहुत बड़ी है। फिर क्यों न हम खेतों में उतर पड़ें। जगदीश काका भी तो शहर से इसीलिए आए हैं कि खेतों को आबाद किया जाए। गाँव के लोग गाँव में रहकर खेतों को आबाद रखेंगे तो गाँवों और शहरों में भूख या अन्न की कमी कैसे रहेगी? शहरों में महँगाई, बेकारी और परेशानियाँ क्यों बढ़ेंगी?''

दोनों ने नारायण की बात पर सिर हिलाकर खुशी ज़ाहिर की। मंगतराम ने कहा–''बात तो तुमने लाख रुपए की कही है, मगर हमारे पास खेत कहाँ हैं?''

नारायण ने सुझाया–''खेत मेरे पास हैं। सब मिलकर खेती करेंगे। भेरू काका से कहो कि रघुवीर को भी हमारे साथ भेज दे और भी कोई आना चाहे तो हम साथ लेंगे।''

छोगालाल ने कहा–''सो तो ठीक है। लेकिन खेत,

ामीन और मकान सभी को मिल रहे हैं। क्या हमें नहीं मेल सकते किसी उपाय से?"

इस पर नारायण चिढ़कर बोला–"नहीं, नहीं मिल ाकते। क्यों मिले आप लोगों को यह सब? और सभी को । नहीं मिल रहे हैं। उन्हीं को मिल रहे हैं जिन्होंने देश ौर सरकार की पत रखी है। बात घूमकर वहीं आती है के रख पत रखा पत। जो पत रखता है उसी की पत रखी ााती है।"

मंगतराम ने उखड़ते हुए कहा–"यहाँ पत रखने-रखाने की बात कहाँ आती है?"

नारायण ने भी तीखी आवाज़ में कहा–"क्यों नहीं ाती? देख लो भेरू काका को! छह बच्चों की पत नहीं ख सके तो वे भी बुढ़ापे में छोड़कर चले गए। जिन लोगों । दो या तीन अच्छे, नेक और समझदार बच्चे समाज को ़कर देश और समाज की पत रखी आज उनकी पत रखने के लिए समाज और सरकार भी भाग-दौड़ कर रही है। ो-तीन बच्चे ही अच्छे बच्चे हो सकते हैं जो आगे चलकर ़श का नाम ऊँचा करते हैं। देश की लाज और पत रखते ़। ढेरों बच्चे नालायक निकलकर देश, समाज और सरकार के लिए सिरदर्द और परेशानी बन जाते हैं। समाज को ऽः-छः, आठ-आठ आवारा, निकम्मे और गन्दगी फैलाने वाले ाच्चे देकर जिन लोगों ने देश और सरकार को परेशान किया

है, उनकी पत और ख्याल कैसे रखा जा सकता है! जिस दिन से दुनिया बनी है उस दिन से यही दस्तूर चला आ रहा है कि रख पत रखा पत।''

नारायण के मुँह से कड़वी सच्चाई सुनकर शर्म के मारे दोनों का सिर नीचा हो गया। नारायण ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा–''अब तो एक ही रास्ता है। आप लोग खेत पर मेरे साथ काम करो और जल्दी ही छगन का ब्याह रचाओ। हाँ, छगन को ज़मीन, मकान और बैंक से पैसा मिल सकता है, मगर यह भी तभी होगा जब वह दो या तीन बच्चों से ज़्यादा बच्चे पैदा न करने की गारंटी दे सके।''

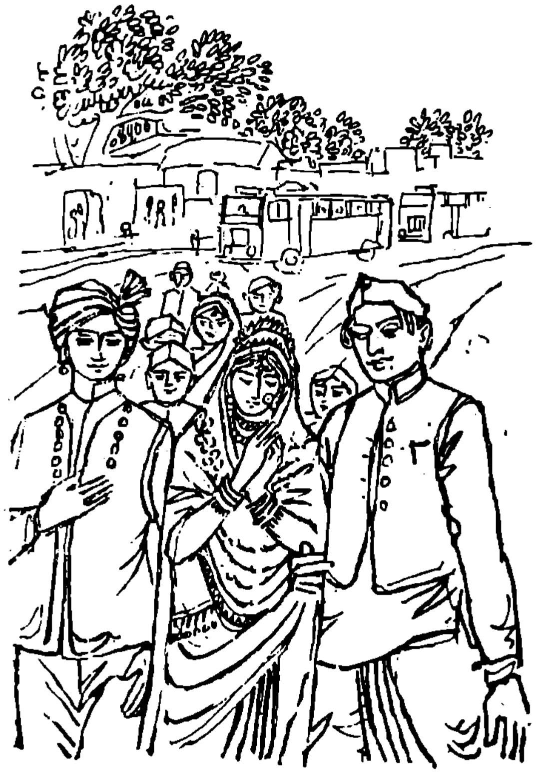
छोगालाल ने भारी आवाज़ में कहा–''उसकी तरफ से बेफिकर रहो भैया। हम लोगों की हालत देखकर और दुख भोगकर अब वह ऐसी गलती नहीं करेगा जो हम करते रहे हैं। वह सच्चाई को अच्छी तरह समझ चुका है।''

नारायण ने कहा–''यह तो अच्छी बात है। जो सच्चाई को समझ लेगा वह खुद भी सुख पाएगा और आगे चलकर उसकी औलाद भी सुख पाएगी।''

बातें करते-करते तीनों पंडितजी के घर जा पहुँचे। वहाँ शादी का मुहूर्त निकाला गया। यह तय हुआ कि शादी सादे ढंग से होगी।

जल्दी ही शादी का दिन आ पहुँचा। सभी काम सादे ढंग से हो रहे थे। इधर तो सोना को दुल्हन बनी देखकर

मंगतराम खुश था और उधर छगन को दूल्हा बना देखकर छोगालाल अपने को भाग्यवान समझ रहा था। फेरे होने के बाद दोनों को मन्दिर की तरफ ले जाया गया। मन्दिर के पास दो सरकारी बसें खड़ी थीं। उधर देखकर एक छोटा-सा बालक



बोल पड़ा–"देखो-देखो, बस!"

दूसरे बच्चे ने कहा–"दो बस!"

नारायण, जो छगन के साथ-साथ चल रहा था, धीरे से उसका हाथ दबाकर बोला–"सुन लिया? बच्चे तुम्हीं से कुछ कह रहे हैं। दो बस! दो से ज़्यादा नहीं।"

उसकी बात सुनकर छगन लजा गया। सोना भी शर्म से दोहरी हो गई। बच्चों को फूल और बताशे बाँटता हुआ लखन नाचता-गाता सबसे आगे चला जा रहा था।

❑ ❑ ❑